मूल्य : 10 रुपये प्रति
वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

जुलाई २००७ | वर्ष ५७ | अंक ७

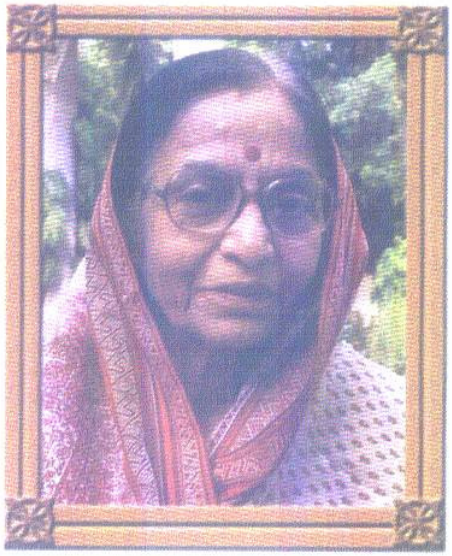

नवनिर्वाचित राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती प्रतिभा पाटिल को
मारवाड़ी समाज की तरफ से बधाई एवं शुभकामनाएं

श्री विशुद्धानन्द सरस्वती
मारवाड़ी हॉस्पीटल
मारवाड़ी समाज की धरोहर - भाग १

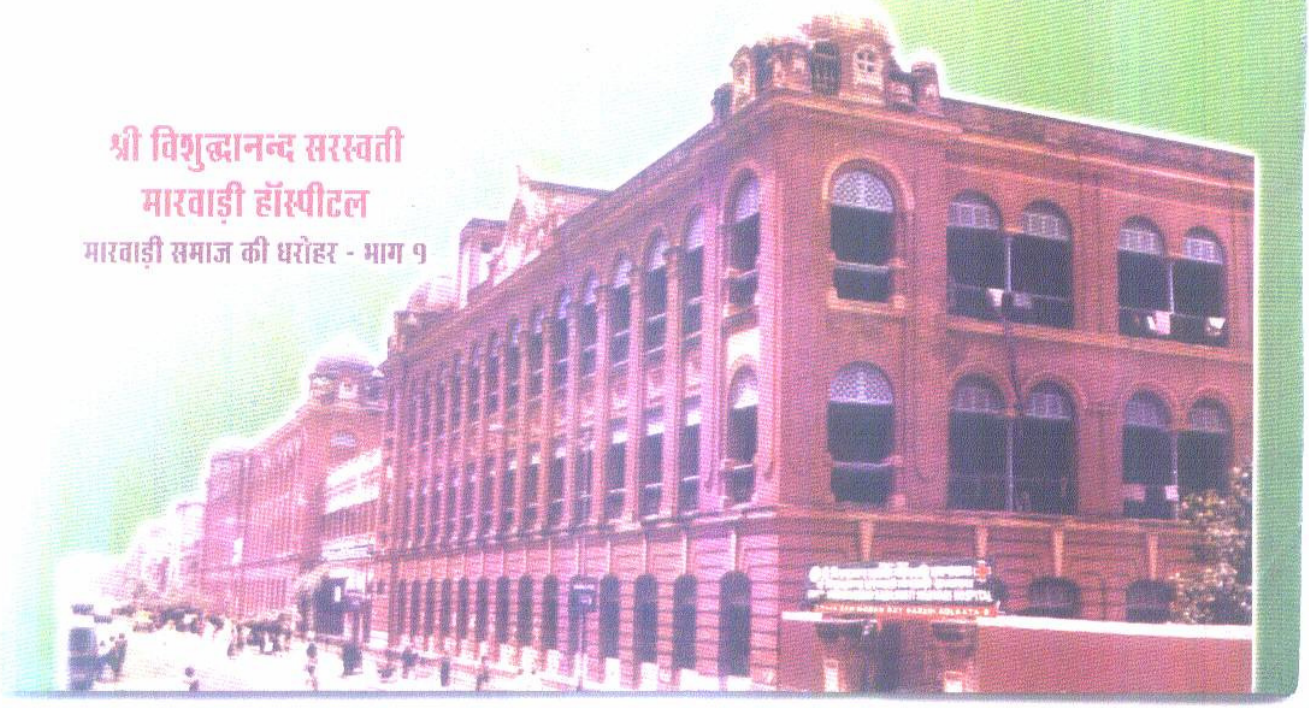

True to our values.

True to our people.

True to our projects.

True to our selves.

Tomorrow happens when there is true partnership.

There are companies that only finance infrastructure. And there are Companies that also finance dreams, aspirations and hopes. SREI, an Indian multinational, belongs to the latter. More than just financial products and services, SREI excels in offering customised, flexible, reliable and cost-effective solutions. The focus clearly is on infrastructure equipment, projects and renewable energy resources through innovative financing and "true partnerships".

SREI not only enjoys a leadership position in the market today, but is also recognised as a people-centric company. This investment in human resource development and consistently acknowledging the blessings of god makes SREI a proud recipient of the Willis Harman Spirit at Work Award.

At SREI, it's the vision of tomorrow that fuels our passion. Propelling us to see tomorrow. Today.

WE MAKE TOMORROW HAPPEN.

SREI
INFRASTRUCTURE FINANCE LIMITED

Visit us at www.srei.com

ASSET FINANCING • INFRASTRUCTURE FINANCING • RENEWABLE ENERGY FINANCE • INVESTMENT BANKING • VENTURE CAPITAL • INSURANCE SERVICES

समाज विकास
जुलाई, 2007
वर्ष 57, अंक 7
एक प्रति - 10 रु.
वार्षिक - 100 रु.
संपादक : नंदकिशोर जालान
सहयोगी संपादक : शंभु चौधरी

समाज विकास

1. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।
2. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
3. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
4. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
5. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
6. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
7. भारत के कोने-कोने में फैले हुए 9 करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
8. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु।

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, 152-बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता-7, फोन : 2268-0319 के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा छपते छपते, 26-सी क्रीक रो, कोलकाता-700014 में मुद्रित।

सामाजिक संस्थाओं से अनुरोध

समाज विकास के सम्पादक मंडल ने निर्णय लिया है कि देशभर में मारवाड़ी समाज द्वारा संचालित समाज की धरोहर कलम के अन्तर्गत : चिकित्सालय, पुस्तकालय, औषधालय, शिक्षालय, विवाह भवन, धर्मशालायें आदि की पूर्ण जानकारी, उनके वर्तमान पदाधिकारियों की सूची के साथ व संस्था के पूर्ण इतिहास को प्रकाशित करेगी। कृपया अपनी पूर्ण सामग्री हमें अगले दो माह के अन्दर भेजने का कष्ट करें। -सम्पादक

email - samajvikash@gmail.com

क्रमांक

चिट्ठी आई है — पृष्ठ 4-5
श्रद्धांजलि — पृष्ठ - 6
संपादकीय — पृष्ठ - 7
विचार गोष्ठी — पृष्ठ - 8
अध्यक्षीय — पृष्ठ - 9
मारवाड़ी समाज की धरोहर — पृष्ठ - 13-20
परिचय — पृष्ठ - 21
पितामह ने कहा — पृष्ठ - 22
छगनलाल जैन — पृष्ठ - 23-24
लघुकथा — पृष्ठ - 25
धारा 498 A — पृष्ठ - 26
योग्य नेतृत्व तैयार करें — पृष्ठ - 27
समीक्षा — पृष्ठ - 28
शुभकरण चूड़ीवाल — पृष्ठ - 29-30
व्याकरण पर प्रतिबंध — पृष्ठ - 31
स्वामी विवेकानंद... — पृष्ठ - 31
युगपथ चरण — पृष्ठ - 32-33
विविध — पृष्ठ - 34

चिट्ठी आई है

अंक झकझोरने वाला विचारोत्तेजक है

मैं समाज विकास पत्रिका की नियमित पाठिका हूँ। इस पत्रिका द्वारा सामाजिक कुरीतियों पर कुठाराघात करने व उनको समाप्त करने हेतु जनजागरण व सुधार के प्रयास अत्यन्त ही प्रशंसनीय है। समय-समय पर दहेज, बाल विवाह, विधवा विवाह आदि पर परिचर्चायें व सुधार हेतु सुझाये गये सुझाव समाज में एक नई चेतना लाकर इन समस्याओं के निराकरण में अपनी महत्ती भूमिका निभायेंगे, ऐसी मेरी मान्यता है। साथ ही मारवाड़ी समाज की अन्य गतिविधियों, समाज विकास के कार्यों, समाज सुधार की नीतियों आदि का भी यह एक दर्पण है। ऐसी बहुआयामी पत्रिका प्रकाशित करने हेतु आपको बहुत-बहुत बधाई।

मई 2007 का समाज विकास का अंक तो अत्यन्त ही झकझोरने वाला विचारोत्तेजक, कन्या भ्रूण हत्या के विविध आयामों पर प्रकाश डालता बहुत ही सुन्दर बना पड़ा है। सभी लेखकों ने अपने-अपने हिसाब से व अपने-अपने तरीके से इस समस्या के अलग-अलग पक्षों पर प्रकाश डाला है।

मैंने इस समस्या को एक समाजशास्त्री, समाज वैज्ञानिक एवं सामाजिक कार्यकर्ता की दृष्टि से इसकी समग्रता में अध्ययन किया है। इसमें केवल मां, डॉक्टर व सास ही नहीं लेकिन सारी सामाजिक व्यवस्था, मूल्य, दृष्टिकोण, धार्मिक मान्यतायें आदि समाज के सभी घटक किसी न किसी रूप में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष, चेतन-अचेतन सभी उत्तरदायी है। जब तक इस समस्या की जड़ पर प्रहार नहीं किया जायेगा, तब तक केवल सतह पर पत्ते साफ करने से कुछ नहीं होगा। मैं मानती हूँ कि समाज परिवर्तन एक दिन में नहीं होता, क्योंकि सदियों से जड़ें पसारे हुई रूढ़ियां, मान्यतायें, मूल्य बहुत गहरे तक फैले हुए हैं लेकिन सामूहिक प्रयासों द्वारा जन चेतना व जागृति, कानूनी सहायता आदि से धीरे-धीरे हम काबू पा सकेंगे। हमें एक सामाजिक क्रान्ति लानी होगी।

-प्रो. डा. तारा लक्ष्मण गहलोत
मेड़ती गेट के अन्दर, जोधपुर-342002

कुछ दिनों से मन में एक प्रश्न बार-बार आ रहा है कि मारवाड़ी कौन? हो सकता है मेरी इसपर जानकारी नहीं के बराबर हो परन्तु इतना तो विदित है कि मारवाड़ी से तात्पर्य - राजस्थान, हरियाणा, मालवा एवं उनके समीपवर्ती भूभागों के रहन-सहन, भाषा एवं संस्कृति वाले वे व्यक्ति जो अपने को मारवाड़ी मानते हों, वह मारवाड़ी है।

बहुत लोग इस जानकारी में रहते हैं कि राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र से आये इसीलिए हम मारवाड़ी हैं तो हरियाणा से आये लोगों का क्या सम्बोधन होना चाहिए? **समाज विकास** पत्रिका के अभिमुख्य खंड (5) "राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित" लिखते हैं साथ ही अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच भी राजस्थानी भाषा, बोलचाल को प्रधानता देती आ रही है और राजस्थानी में वार्ता के ऊपर बल देती है। कृपया इस विषय पर मेरा मार्ग दर्शन करने का कष्ट करेंगे।

-राजेश कुमार जैन
भवानीपटना-766001

कृपया विवाहों में सादगी बरतें

"समाज विकास" पत्रिका जून 2007 के मुख पृष्ठ पर महत्वपूर्ण हस्तियों को जैसे भारत के राष्ट्रपति डॉ. कलाम, श्री भैरोंसिंह शेखावत, भारत के उपराष्ट्रपति का चित्र छापकर बड़ा ही सराहनीय कार्य किया है। सचमुच में सम्पादक की सोच काफी दूरदर्शी एवं अनुभवी हैं। आपकी कृति "**कृपया विवाहों में सादगी बरतें**" बड़ी ही हृदय को छुने वाली, प्रेरणादायक एवं समाज के हित में इसे अपने जीवन में उतार कर सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में एक शुभ कार्य होगा।

-प्रह्लाद राय शर्मा
बिहार मारवाड़ी सम्मेलन शिक्षा समिति
सह महासचिव, पटना

समाज विकास नियमित पूगै हैं, आभार! जून/07 में "**कृपया विवाहों में सादगी बरतें**" पुराणो विषय होवणै पर भी चिर-नूतन है जैयाँ **राम को नाम** अनादि है तौ अनन्त भी।

आप ठीक लिख्यो कै **कूं-कूं पत्रिका** में व्ययहीनता आई है। दूजा समारोहों में भी कार्ड, सस्ता स्वीकारै लागा है। 2/3 कार्यक्रम रा कार्ड, प्राय: नित्य आवै हैं अर आवतों ही आपरो श्रुति वचन स्मरण हो जावै - कै सत्य ही आपरै सुझाव को चलन होवें लागो है।

-अम्बू शर्मा, सम्पादक-नैणसी
श्रीभूमि, कोलकाता-700048

राजनीति शब्द राजा, रजवाड़ा को द्योतक हो, यो शब्द सब तरह स बदनाम हो गयो है, जब तक यो शब्द रेवगो, देश म सही काम होवगो, बिलकुल आशा नहीं है। इस क स्थान पर देश सेवा करदियो जाव तो अति उत्तम रेशी।

मारवाड़ी समाज का दो पहलु है, देश म, व्यवसाय क्षेत्र म। समाज पुरा पुरी बदनाम है, ऐक जणों भी साधु नहीं बताव लेकिन

विवाह में सादगी बरतें।

सेवा क क्षेत्र म समाज सब स अग्रणी है, या आवाज प्रत्येक दिशा स आव है।

समाज देश-विदेश म सब जगह प्रयास संख्या म है, या सबस बड़ी संतोष की बात है।

देश विदेश म कार्य करणा का जितना भी क्षेत्र है, प्रत्येक क्षेत्र म समाज को पुरा पुरी प्रवेष है, ऐक क्षेत्र भी अधुरो नहीं।

अग्रवाल समाज कि अगर आपा बात करां तो, जन्म स क्षत्रि है, समय पा कर तलवार छोड़ कर तराजु सम्भाल लियो।

देशवासी मारवाड़ी समाज न बणिया बताव है, उनको विचार बिल्कुल सही है, बिगड़ी न बणाव वो बाणियो।

एक समय हो जब भाई ही काम करता हा, आज वो समय है, बहन और भाई, सब स्थान पर काम कर रिया है, इस स बढ़कर और के ताकत हो सक है।

मारवाड़ी समाज म भाषण शब्द को व्यवहार नहीं होणो चाहिए, इस शब्द न सुण सुण कर कान बेरा हो गया। इसके जगह अपणी बात या अपणा विचार बोलनो सही है।

इसी अंक म **भाई श्री सांवरमल भीमसरिया जी** को लेख है, सही मार्गदर्शक क रूप म है। इस न पठण क बाद म इस क्षेत्र म आण क लिय पल भर भी देरी नहीं करनो चाहिज अब भी अगर आपा नहि चेतांगा तो, चेतणा स रिया, मार खाता आ रिया हां, और खाता ही रेवांगा।

-शान्ति कुमार जैन
पलोट नम्बर 9/B
कलमना रोड, नागपुर-440008

वैवाहिक आचार-संहिता में दिये गये सभी सुझाव उचित है मगर फिर भी मिलाई में चाँदी के चार रुपये ही दिये जाते हैं। हाई टी, बूफे और सज्जन गोठ अभी बंद नहीं हुए हैं। सजावट में लाखों रुपये बर्बाद किये जाते हैं। दहेज के लिए महिलाओं को मरने के लिए विवश होना पड़ता है, यह कूरुतियां कैसे हटेगीं ? गर्भ में मादा भ्रूण की हत्या कैसे रुकेगी, तरह-तरह के नियम तो बनाये जाते हैं मगर व्यवहार में नहीं लाये जाते, क्या यह उचित है ?

-परशुराम तोदी 'पारस'
सुरत (गुजरात)

सिलीगुड़ी में समाज के विकास के लिए कार्यक्रम हाथ में लेना चाहते हैं, पढ़कर बड़ी खुशी हूँ। जनपथ दैनिक आपको पूर्ण सहयोग देगा। आपका अध्यक्षीय अभिभाषण पढ़कर बड़ी खुशी हुई।

-प्रताप सिंह जैन (बैद)
जनपथ समाचार (हिन्दी दैनिक)
महावीर भवन, सेठ श्रीलाल मार्केट, सिलीगुड़ी-734001

भारतायन

डॉ. प्रताप चन्द्र चन्दर

(प्रसिद्ध शिक्षाविद, भूतपूर्व शिक्षामंत्री-भारत सरकार, सुलेखक, कवि, चित्रकार....)

मूल : बंगला (हिन्दी लिप्यान्तरण)

शुन् शुन् गुणवान शुन दिया मन।
भारतेर इतिवृत्त करिब कीर्तन॥
सिन्धु हइत करे उठिलो भारत।
ऐ व्यापारे नाना मुनि धरे नाना मत॥
उत्तरेते गिरिराज नाम हिमालय।
तूषार - किरीट, साधुजनेर आश्रय॥
दक्षिणे बन्दना गाय विशाल सागर।
पद धौत करे सदा येन अनुचर॥
गङ्गा - यमुना - सिन्धु - ब्रह्मपुत्र - हार।
कृष्णा - कावेरी - ताप्ती मेखला - संभार॥
श्यामल शश्येर बास भारतेर गाय।
बिन्ध्य - पर्वत सेखा कटिहार प्राय॥
ऐ हेन विचित्र तुमि मोदेर भारत।
बहू माझारे खोजे साम्योर पथ॥
जन्मभूमिर कथा अमृत - समान।
बाङ्गाली चारण भणे शोने पुण्यवान्॥

(अनु : राजस्थानी)

ईस मेरी तूँ सुँण, दे कान,
विगत भारत रो उजलू गान।
सिंधु - पीठ पर ऊभो भारत,
ग्यानी भाखै अद्भुत ग्यान॥
उत्तर में गिरिराज हिमालो,
तूहिन - मुगट संत, रिस छाजै।
दक्खण सागर पाँव पखारै,
जस री घाई तेरी गाजै॥
गंगा - जमुना - सिंध - नद - हार।
वाहन तीन* मेखला बाजै॥
शस्य - श्यामला अंबर तेरो,
विंध्याचल रो करधन घेरो।
गुलदस्तो यो रंग - रंगीलो,
फबै भाल पर भारत सें रो॥
जनम - भोम री अमरित गाथा।
तव चरणाँ में माथो मेरो॥

*(*दक्षिण भारत की तीन नदियाँ - कृष्णा, कावेरी, और तापि)*

-केसरीकान्त शर्मा 'केसरी'
मण्डावा - 333704 (राजस्थान)

श्रद्धांजलि

वयोवृद्ध समाजसेवी गणपतराय धानुका नहीं रहे

गुवाहाटी। अपना जीवन समाज की सेवा के नाम कर देने वाले वयोवृद्ध समाजसेवी गणपतराय धानुका का 4 जुलाई 2007 को निधन हो गया।

वर्ष 1910 की 4 दिसंबर को राजस्थान के रतनगढ़ में जन्मे श्री धानुका की समाज में भीष्म पितामह का दर्जा प्राप्त था। वे अपने पीछे चार बेटियों के अलावा पौत्र, प्रपौत्र-प्रपौत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

15 वर्ष की बाल उम्र में अपने मामा के साथ गुवाहाटी में कदम रखने वाले स्व. धानुका ने महज 22 वर्ष की उम्र में

श्री गौहाटी गौशाला के अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी संभाल कर अपने जीवन को समाज के नाम लिख दिया। मारवाड़ी दातव्य औषधालय के अलावा पीएम धानुका बालिका विद्यालय, श्री मारवाड़ी हिंदी पुस्तकालय जैसी संस्थाओं से वे जीवन के अंतिम क्षणों तक जुड़े रहे। स्व० ठाकुरसीदास धानुका के पुत्र गणपतराय धानुका ने वाराणसी संस्कृत विश्वविद्यालय से पंडित की उपाधि हासिल की। गुवाहाटी विश्वविद्यालय और गुवाहाटी कामर्स कालेज की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले समाजसेवी ने पांच साल तक गुवाहाटी कामर्स कालेज के कोषाध्यक्ष का पद संभाला। इसके अलावा वे सात साल तक कामरूप चैंबर आफ कामर्स के अध्यक्ष और पांच साल तक गुवाहाटी गोशाला ट्रस्ट बोर्ड के चेयरमैन रहे। उनको नेहरू स्टेडियम के अलावा मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, कोलकाता का आजीवन सदस्य होने का गौरव प्राप्त था। मारवाड़ी सम्मेलन की गुवाहाटी शाखा का उन्होंने सदैव मार्गदर्शन किया और समाज में एकजुटता को बनाए रखने को प्रेरित किया। महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के हिमायती स्व. धानुका ने अपनी मां की स्मृति में पीएम धानुका बालिका विद्यालय के लिए न सिर्फ भूमि दान में दी। बल्कि विद्यालय के निर्माण में आर्थिक सहयोग भी दिया। समाज में महिलाओं का कद बढ़ाने और उन्हें पुरुषों के समकक्ष लाने के लिए उन्होंने सदैव महिलाओं में जागृति लाने का प्रयास किया। समाज की हर एक छोटी-बड़ी संस्थाओं को उनका सहयोग व मार्गदर्शन प्राप्त था।

शोक संदेश

श्री गणपतराय जी धानुका एक ऐसे व्यक्ति थे जो समाज के लिए जीए। बात चाहे समाज को एकजुट रखने की हो या समाज पर अत्याचार के विरुद्ध प्रतिवाद करने की हो श्री धानुका की अग्रणी भूमिका रही। सामाजिक एवं रचनात्मक कार्यों में उनका कोई सानी नहीं था। आज के समाज के युवा पीढ़ी के लिए उनका जीवन एक उदाहरण एवं प्रेरणात्मक है।

स्वतंत्रता सेनानी एवं राष्ट्रीय एकता के प्रबल समर्थक श्री धानुका का व्यक्तित्व जीवन में नियम के पक्के और अनुशासन प्रिय का था। असम के सामाजिक, सांस्कृतिक, औद्योगिक एवं राजनैतिक जीवन में पिछले 50 से अधिक वर्षों में अद्‌भुत भूमिका एवं योगदान रहा है। श्री धानुका पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन एवं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए थे एवं कई दशकों तक उन्होंने सम्मेलन को नेतृत्व प्रदान किया था। वह इस बात के हामी थे कि समाज कई संगठनों में बँटने के बजाए सम्मेलन के अन्तर्गत एक शसक्त एवं मजबूत आवाज बन सकता है।

यह अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के लिए बड़े हर्ष एवं प्रतिष्ठा का विषय था जब 2005 वर्ष के लिए सम्मेलन द्वारा स्थापित भंवरमल सिंघी समाज सेवा पुरस्कार से श्री धानुका को सम्मानित करने का गौरव प्राप्त हुआ। अस्वस्थता के कारण 97 वर्षीय श्री धानुका स्थापना दिवस समारोह में स्वयं नहीं पधार सके यह कमी हमें सदैव खलती रहेगी लेकिन उनका आर्शीवाद एवं शुभकामनाएँ सदैव सम्मेलन के साथ रहा है।

श्री धानुका के आकस्मिक एवं दुःखद निधन से असम में ही नहीं पूरे देश ने समाज के एक ऐसे व्यक्ति को खो दिया है जिसकी पूर्ति आनेवाले वर्षों में संभव नहीं है। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन उन्हें प्रणाम करता हुआ उनकी आत्मा की शांति के लिए परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

—**सीताराम शर्मा**, राष्ट्रीय अध्यक्ष

संपादकीय

मिलनी : चाँदी के चार नहीं पाँच सिक्के दें!

समाज में पिछले कई दिनों से यह बहस चल रही है कि चाँदी के चार रुपये देने-लेने में क्या हर्ज है। सम्मेलन का मानना है कि प्रचलित मुद्रा में मिलनी देनी-लेनी चाहिए। कई लोगों ने यह तर्क भी दिया कि कागज के एक या दो-दो के नोट छपने बन्द हो गए सो यह संभव नहीं है। तर्कशास्त्र के कई रास्ते हैं, समाज के पास अपने-अपने तर्क हैं। समृद्ध लोगों के तर्क कुछ भिन्न हैं और जो असक्षम हैं उनके तर्क कुछ और।

तर्क ने कई बार मेरे विचारों को भी प्रभावित करने का प्रयास किया, इस विषय पर एक लम्बी चुप्पी के बाद एवं सभी तरह के अलग-अलग विचारों को पढ़ने एवं सुनने के बाद आज कुछ विचार व्यक्त करने का प्रयास कर रहा हूँ। पहली बात तो यह जो सक्षम हो या असक्षम - सभी इस बात पर सहमत हैं कि समाज में सुधार की प्रक्रिया जारी रहनी चाहिए। और यदि प्रक्रिया जारी हो तो क्या-क्या सुधार किये जा सकते हैं, इस पर बहस भी जारी रहनी चाहिए। "**सज्जन गोठ**" विवाह में बहुत ही जरूरी है ? क्या इसके बगैर शादी की रस्में पूरी नहीं हो पाती, सज्जन गोठ का वह स्वरूप (जो था) वह आज भी बरकरार है ? यदि नहीं तो क्यों नहीं इसे समाप्त कर दिया जाये ? और जिन लोगों ने यह परम्परा समाप्त कर दी उनका क्या बिगड़ गया। क्या उनके सम्बन्धी नाराज हो गए ? या सम्बन्धों में दरार पैदा हो गयी ? ऐसा कुछ भी तो नहीं हुआ, वरन् दोनों पक्ष के समस्त लोगों ने इस बात को सराहा ही। अब बात "**चार रुपये मिलनी**" की ही लें, ऊपर भी इस बात पर जोर दिया गया है कि तर्क की कोई परिभाषा नहीं होती, इसको तय करना संभव नहीं है। फिर भी तर्क की बातों को तर्क से ही काटा जा सकता है। चाँदी के चार रुपये सिक्के ही हैं, ये सिक्के आप देते हैं ? और यदि ये सिक्के आप देते हैं, तो प्रचलित मुद्रा के सिक्के देने में संकोच क्यों ?

समाज को इस संकोच से पर्दा उठा देना चाहिए। चाँदी के सिक्के देने से ही किसी का मान नहीं बढ़ता और यदि बढ़ता हो तो उसे चार सिक्कों की जगह पाँच-छः....दस-ग्यारह सिक्कों के देने से उनका ज्यादा मान बढ़ जाता होगा। **जिन्हें चाँदी के ही सिक्के देने हैं वे चार की जगह पांच सिक्के दें परन्तु मिलनी देनी हो तो उसे प्रचलित मुद्रा में ही देनी होगी। यही समाज की माँग और यही समाज की भावना भी है।** कुछ लोगों का यह तर्क भी सामने आया कि मुद्रा का अवमूल्यन हो चुका है। मुद्रा से समाज की मर्यादा नहीं नापी जा सकती, **मिलनी** को मुद्रा के मूल्य से कभी नापा-तौला नहीं जा सकता। **मिलनी** मान व सम्मान का सामाजिक सूचक है। इसके मूल्य को सोना-चाँदी के मूल्य से नापा नहीं जा सकता, न पिछले 200 सालों में नापा जा सका है और न अगले 1000 सालों तक नापा जा सकेगा। जो इसके मूल्य को नापने का प्रयास कर रहे हैं वे अपनी सोच को बदलें, इसी में समाज का भला है।

आइये आज से ही हम प्रचलित मुद्रा में ही चार सिक्कों को मिलनी का स्वरूप स्वीकार करें। चाँदी के देने हैं तो पाँच दें। चार नहीं चलेंगे। अर्थात् मिलनी को मिलनी ही रहने दें, और चांदी को चांदी, धन देना है तो धन दें। फिर मिलनी की बात न करें।

आज भले ही हम सम्पन्न हो चुके हैं परन्तु हमारे पूर्वज इस बात को कदापि स्वीकार नहीं करेंगे कि उनके बच्चे चाँदी के पाँच रुपये बतौर मिलनी स्वीकार करें। समाज को दिशा समाज के सबलोग मिलकर देते हैं, नियमों का पालन परम्परा एवं समाज की मर्यादा से चलती है न कि तर्क से।

राष्ट्रीय एकता हमारा नारा है, सारा देश प्यारा है।

विचार गोष्ठी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की विचार गोष्ठी

मारवाड़ी समाज की खामियों को दूर करने का अह्वान

आज शाम कलकता चेंबर ऑफ कॉमर्स में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा सुप्रसिद्ध समाजसेवी व सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष मोहनलाल तुलस्यान की पुस्तक "**चिंतन के कुछ क्षण**" पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस पुस्तक में मारवाड़ी समाज उसकी समस्याओं, शिक्षा, संस्कृति, आधुनिक समाज का बढ़ता प्रभाव, बेमेल विवाह की खामियां व आपसी प्रेम और सद्भाव का महत्व आदि विभिन्न विषयों पर 51 लेख लिखे गये हैं, प्रत्येक लेख में समाज की ज्वलंत विषयों व समस्याओं का गहराई से आंकलन किया गया है। गोष्ठी के दौरान बतौर प्रधान वक्ता उपस्थित सम्मेलन के पूर्व उपाध्यक्ष रतन शाह ने मारवाड़ी समाज पर प्रकाश डालते हुए पुस्तक के संदर्भ में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की और कहा कि हर समाज या संस्कृति में कुछ अच्छाई तो कुछ बुराई होती है ऐसी बात नहीं कि मारवाड़ी समाज इससे अछूता है लेकिन फिर भी हमें आगे आना होगा और अपनी खामियों को अच्छाइयों में बदलना होगा। सम्मेलन के प्रमुख वक्ता जुगल किशोर जैथलिया ने पुस्तक पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि श्री तुलस्यान को मारवाड़ी समाज की चिंता थी, इसलिए उन्होंने अपनी इस चिंता को चिंतन का रूप दिया,। साथ ही इस पुस्तक के माध्यम से उन्होंने कुछ ऐसे विषय भी उठाये हैं। सम्मेलन सभापति सीताराम शर्मा ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर प्रह्लाद राय अग्रवाल, विजय गाड़ोदिया, संतोष जैन ने पुस्तक पर अपने-अपने विचार रखे। साथ ही मौके पर संयुक्त महामंत्री अरुण गुप्ता, रवि लड़िया, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष हरिप्रसाद कानोड़िया व राष्ट्रीय महामंत्री राम अवतार पोद्दार भी मौजूद थे।

अध्यक्षीय

मिलावट के विरुद्ध जनमत तैयार करें!

खाद्य पदार्थों एवं दवा में मिलावट एक जघन्य अपराध है। देश के विभिन्न भागों से खाने-पीने की चीजों में मिलावट एवं नकली दवा बनाकर बेचने के समाचार बीच-बीच में मिलते रहते हैं। यह एक मानवता के प्रति अपराध है। कतिपय लोभी व्यापारी इस तरह की गतिविधियों से मनुष्य की जिन्दगी से खिलवाड़ करते हैं इस प्रवृत्ति को न तो स्वीकार किया जा सकता है न ही क्षमा।

धन कमाना कोई गुनाह नहीं है। धनोपार्जन समाज एवं राष्ट्र की प्रगति के लिये आवश्यक भी है। लेकिन येन-केन-प्रकारेण धन की लालसा कूप्रवृत्तियों एवं अपराध को जन्म देती है। मिलावट की समस्या किसी प्रान्त या समाज तक सीमित नहीं है, यह एक राष्ट्रीय समस्या के रूप में ऊभर कर सामने आ रही है। नकली दवा की विक्री एक खतरनाक स्थिति तक पहुँच गयी है। यहां तक कि कभी-कभी तो नकली दवा बनाने एवं बेचने वाले स्वयं नकली दवा के शिकार हो जाते हैं। पिछले दिनों '**आजतक**' चैनल पर इस समस्या की विकराल स्थिति पर सनसनी खेज एक चौंकानेवाला कार्यक्रम पेश किया गया था।

मारवाड़ी समाज एक व्यापारी समाज है। व्यापार में शुद्धता एवं ईमानदारी हमारी सबसे बड़ी ताकत है। दूर-दराज गांवों-कस्बों में मारवाड़ी व्यापारी एवं साहूकार की इज्जत किसी बैंक या सरकारी खजांची से कम नहीं होती। लोग आंख मूंदकर उसका विश्वास करते हैं। ईमानदारी एवं जुबान की कीमत ही उसकी सबसे बड़ी इज्जत होती है।

किसी समाज एवं प्रांत में क्या होता है प्रश्न यह नहीं हैं। सामाजिक बुराईयां सारे देश में फैली है लेकिन हमारे बुजुर्गों ने मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना इसलिये की कि सम्मेलन के माध्यम से हम अपने समाज में फैल रही खामियों एवं कूप्रवृत्तियों को समाज सुधार के माध्यम से रोक सके। अमुक समाज में भी तो बुराइयाँ है यह कहना निदान नहीं है। हमें तो अपने समाज की बुराइयों से बचाना है, जिससे हमारा समाज अपनी खूबियों को बचाकर रखते हुए, श्रेष्ठता की ओर बढ़े एवं तरक्की करें।

ठीक इसी तरह मिलावट के विरूद्ध मारवाड़ी समाज को पहल करनी है। हमारे समाज के व्यापारी न मिलावट करेंगे न ही मिलावट करने वाले का साथ देंगे। इस जघन्नय प्रवृत्ति के विरुद्ध हम अभियान छेड़ेंगे, इसके खिलाफ जनमत तैयार करेंगे। एक मछली पूरे तालाब को गंदा करती है। मिलावट का एक 'काण्ड' पूरे समाज को कलंकित करता है। हम इसे बर्दास्त नहीं करेंगे। मारवाड़ी व्यापारी एवं समाज, सभी मिलावट करने वालों के विरुद्ध है, चाहे वे किसी प्रांत या समाज के हो। इसी तरह एक व्यक्ति के अपराध के लिये पूरे समाज को दायी करना, अपमानित करना, दण्डित करना पूरी तरह गलत एवं अवांछित है।

पिछले दिनों उड़ीसा के कांटाभाजी क्षेत्र से इस तरह की घटना का समाचार मिला। मिलावट करने वाले की जितनी निन्दा की जाये कम है लेकिन जिन लोगों ने एक व्यक्ति के अपराध के लिये पूरे मारवाड़ी समाज के विरुद्ध जो 'दंगा' किया उसे किसी भी परिस्थिति में स्वीकार नहीं किया जा सकता। मिलावट या नकली दवा बनाने या बेचने वाले के प्रति किसी की कोई सहानुभूति नहीं हो सकती। उसे कानून एवं समाज दोनों का ही सामना करने पड़ेगा लेकिन इस सवाल पर जातीय दंगा करने वाले एवं विरोध, व्यापारियों को तंग करने वालों भी कम दोषी नहीं है। उन्हें इस नाम पर अराजकता फैलाने एवं समाज में वैमनस्य विरोध एवं लड़ाई जैसा नहीं करनी चाहिये।

सरकार एवं पुलिस को चाहिये कि मिलावट एवं नकली दवा विक्रेताओं के विरुद्ध कठोरतम कदम उठाये एवं इस तरह के अपराध के विरुद्ध जनमत भी तैयार करने की आवश्यकता है। परन्तु दंगा कर पूरे समाज को कलंकित करना कतई शोभनीय नहीं ।

आपका

सीताराम शर्मा

(सीताराम शर्मा)

पूर्वोत्तर में मारवाड़ी राजनैतिक कार्यकर्त्ता सम्मेलन

राजनीति क्षेत्र में मारवाड़ी समाज

विजय कुमार मंगलूनियां, अध्यक्ष-पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन

राजस्थान, हरियाणा के लाखों मारवाड़ी पूर्वोत्तर क्षेत्र में प्रवास कर रहे हैं और अधिकांशत: सदा के लिये यहीं के हो गये हैं। वर्तमान में अधिकतर परिवारों का अपने मूल प्रदेश से कोई लेना देना नहीं सा रह गया है। इन प्रवासियों ने मुख्यत: व्यापार-वाणिज्य का पेशा अपनाते हुए इन सातों राज्यों की आर्थिक बागडोर को संभाल रखा है। कुछ लोग प्रशासनिक क्षेत्र में भी हैं और वहां भी अपनी मेहनत और कार्यकुशलता से अपना वर्चस्व कायम कर रखा है। मारवाड़ी समाज के लोगों ने यहां के स्थानीय वाशिंदों के साथ कंधे से कंधा मिलाते हुए, प्रेम और सौहार्द के साथ यहां वास करते हुए जिस अंचल में भी रहते हैं उस अंचल में स्कूल-कॉलेज, मठ-मन्दिर, सार्वजनिक स्थलों का निर्माण आदि कर अपना योगदान दिया है। यह समाज इन प्रदेशों में न तो सरकारी नौकरी की मांग करता है और न ही किसी भी प्रकार के आरक्षण की। सिर्फ लगन और मेहनत के साथ कर्म करते हुए अपने परिवार का भरण-पोषण करता है तथा सामर्थ्य के अनुसार इन्हीं क्षेत्रों के विकास में अपना योगदान करता रहा है।

लेकिन राजनीति के क्षेत्र में मारवाड़ी समाज के लोगों की पूर्वोत्तर प्रान्तों में जो सक्रिय भूमिका होनी चाहिये वह बिल्कुल भी न तो कभी थी और न आज भी दिखाई पड़ रही है। स्वतंत्रता के पश्चात इस क्षेत्र में कुछ व्यक्तियों का नाम ही हमारे सामने आता है तथा लोकसभा, राज्यसभा और विधान सभा सदस्य रह चुके व्यक्तियों में स्व० हीरालाल पटवारी एवं स्व० राधाकिशन खेमका का ही नाम आता है जो इन सभी सात राज्यों में से सिर्फ असम से ही हैं। असम के पिछले लोक सभा और विधान सभा चुनावों के विजयी प्रत्याशियों में एक भी हमारे समाज से नहीं है।

मारवाड़ियों की पूर्वोत्तर में प्रवास करने वाली आबादी को देखते हुए उपरोक्त संख्या काफी कम है। देश की विशेषत: पूर्वोत्तर जैसे अशांत क्षेत्र की वर्तमान राजनैतिक परिस्थियों में किसी भी समुदाय विशेष को राजनीति में पूर्ण रूप से सक्रिय होना नितांत आवश्यक है। हमारे समाज के लोगों को इस विषय पर चिंतन करना बहुत ही जरुरी है। इसी राजनीतिक चेतना को जगाने के उदेश्य से अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी समाज ने मारवाड़ी राजनैतिक कार्यकर्त्ता सम्मेलन का आयोजन कर अपना पहला कदम बढ़ाया है। इसी के तहत पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन जून माह में एक मारवाड़ी राजनैतिक कार्यकर्त्ता सम्मेलन आयोजित करने जा रही है।

मारवाड़ी समाज के हर व्यक्ति को राजनीति के क्षेत्र में निम्न बातों पर अवश्य ध्यान देना होगा :-

1) मतदाता सूची में परिवार के सभी बालिग सदस्यं का नाम लिखायें।

2) मतदाता परिचय-पत्र सभी परिवार जनों का अवश्य लेवें।

3) हर चुनाव में परिवार का प्रत्येक मतदाता (महिलाओं सहित) निश्चित रूप से अपने मताधिकार का प्रयोग करें।

4)समाज के युवा वर्ग को चुनान के समय राजनीति में सक्रिय होने के लिये प्रोत्साहित करें।

5) जिन मतादाताओं/परिवारों के पते में परिवर्तन हुआ है वे चुनाव विभाग से संपर्क कर वर्तमान पते के मतदान केंद्र के अनुसार मतदाता सूची में अपना नाम स्थानांतरित करवायें।

6) स्थानीय लोगों के साथ घूलमिल कर रहते हुये इतर समाज में अपनी पैठ जमायें ताकि अगर आप चुनाव लड़ते हैं तो जीतने के अवसर बढ़ेंगे, क्योंकि सिर्फ मारवाड़ी मतदाताओं के मतों के बदौलत चुनाव जीतना सम्भव नहीं है।

7) पैसा सब कुछ है-यह विचारधारा मन से त्यागे। आज की वास्तविकता के मद्देनजर राजनीति के प्रभाव को यतार्थ के रूप में समझें। चाहे राज्य सरकार से आपका काम है या नगर निगम से या पुलिस विभाग से, सभी जगह काम पड़ने पर आमतौर पर हम लोग प्रभावशाली आदमी की तलाश करते हैं। अपने ही समाज के अधिक लोग राजनीति में सक्रिय होंगे, तो अपेक्षाकृत आसानी होगी।

8) सिर्फ व्यापार व पैसे से व्यवसायी वर्ग को अपना अपेक्षित सम्मान मिल पायेगा, यह बात आंशिक सच है लेकिन पूरी तरह नहीं। साथ में राजनैतिक सक्रियता का मेल हो जाये तो व्यापारी वर्ग को अपेक्षित सम्मान दिलाने में अधिक आसानी होंगी। पुराने, आऊटडेटेड कानूनों को समाप्त करने पर विचार किया जा सकेगा। व्यापारियों पर लागू विभिन्न लाइसेंसों व औपचारिकाताओं में भी कमी लाई जा सकेगी। अर्थात् जीवन में अपेक्षित सम्मान व व्यापार करने में सरलता के लिये आवश्यक है, राजनीति में सक्रिय भागीदारी।

राजनीति में महिलाओं व लड़कियों को भी आगे आने के लिये प्रोत्साहित करना चाहिये। आज के समाज में लड़कियां पढ़ाई में काफी अव्वल सिद्ध हो रही है, उनका विधानसभा व संसद में प्रतिनिधित्व देश के लिये शुभ होगा। संसद में महिलाओं का प्रतिनिधित्व सुरक्षित किये जाने की शीघ्र संभावना है।

आइये, राजनैतिक सक्रियता के लिये अपने अधिकारों का उपयोग करें और कुछ समय का योगदान समाज की नेतृत्व प्रदान करने में भी करें।

पूर्वोत्तर में मारवाड़ी राजनैतिक कार्यकर्त्ता सम्मेलन

मारवाड़ी समाज में राजनीतिक चेतना का संचार हो : सम्मेलन

जुलाई 15, 2007। गुवाहाटी में **पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन** के तत्वावधान में आयोजित **''मारवाड़ी राजनैतिक कार्यकर्त्ता सम्मेलन''** में एक मत से सभी ने पूर्वोत्तर में बसे सभी मारवाड़ियों से आह्वान किया कि मारवाड़ियों को असम के सर्वांगिण विकास में महत्वपूर्ण योगदान होते हुए भी राजनीति में बहुत ही नगण्य है। जितने भी लोग इस समाज के राजनीति में आये हैं वे स्वच्छ व बेदाग हैं, किसी पर भी कोई प्रकार का लांछन नहीं लगा है। अत: देश व असम की इस वर्तमान दुर्गंधपूर्ण, गंदी राजनीति को दूर करने के लिए इस समाज के लोगों को आगे आना चाहिए। समाज में जो भी राजनीति में आगे आयें उन्हें उचित सम्मान, सहयोग देना चाहिए।

-सम्मेलन की अध्यक्षता विजय कुमार मंगलूनियां ने की व सभी ने स्वागत किया।

-सर्वप्रथम **श्री रामनिरंजन गोयनका,** अध्यक्ष असम साहित्य सभा, फैंसी बाजार शाखा को गमछा पहनाकर सम्मान किया व उन्होंने दीप प्रज्वलित कर सम्मेलन का शुभारंभ किया। उन्होंने अपने संबोधन में समाज के युवकों को राजनीति में आगे आने को निवेदन किया।

-विशिष्ट पत्रकार दैनिक पूर्वोदय के सलाहकार संपादक श्री **बिनोद रिंगानिया** ने की नोट एड्रेस प्रस्तुत किया। विस्तृत रूप से राजनीति में कैसे हम आगे बढ़ सकते हैं, सारे विषयों पर पूर्ण रूप से अपनी बातें रखी। उन्होंने कहा कि सामाजिक संगठनों को चुनावों के समय जातीय समीकरण की राजनीति से दूर रहना चाहिए।

-मुख्य वक्ता वरिष्ठ अधिवक्ता **श्री श्यामसुन्दर हरलालका** ने राजनीति में कार्यकर्त्ताओं को पूरी तैयारी के साथ चुनावों में उतरना चाहिए। उन्होंने देश व प्रांत की वर्तमान राजनैतिक स्थिति पर विस्तृत चर्चा की।

-अपने संबोधन में वरिष्ठ नेता **श्री जयकुमार जैन** जिनका सम्मेलन की ओर से असमिया फूल गमछा पहनाकर सम्मानित किया गया। कहा कि समाज के प्रति निजको दर्द व प्रेम है वहीं सच्चे समाज हितैषी व राजनीतिक हो सकते हैं। श्री जैन ने इस अवसर पर कहा कि मारवाड़ी समाज राजनीति में समाज की उपस्थिति दर्ज कराने हेतु प्रयत्नशील रहें, आपने समाज के लोगों को अपनी मानसिकता में बदलाव लाने का भी आग्रह किया कि राजनीति में जो व्यापारी जाते हैं उनको उचित मान व सहयोग देवें। ऐसे व्यक्तित्व ओंकारमल अग्रवाल की जिन्होंने सभी से कंधा से कंधा मिलाकर काम किया है कि भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा कहा कि राजनीति में रुचि रखने वालों की समाज, परिवार सभी की तरफ से सम्मान, व इज्जत मिलनी चाहिए।

-**श्री गोविन्द अग्रवाल,** पूर्व अध्यक्ष, बरपेटा नगरपालिका, सुमन अग्रवाल, बरपेटा रोड, श्रीधर शर्मा, बरपेटा रोड, श्री नवल मोर, श्री प्रमोद स्वामी, श्री जयप्रकाश खदड़िया, श्री श्याम सुन्दर भीमसरिया, श्री चंद्रप्रकाश शर्मा, श्री पवन सिकरिया, श्री रवि अजितसरिया आदि ने सभा को सम्बोधित किया।

सभा का संचालन बहुत ही सुंदर ढंग से प्रमोद तिवाड़ी ने किया।

अंत में राजनैतिक सम्मेलन के मुख्य संयोजक व अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ने अपने भाषण में कहा कि मारवाड़ी लक्ष्मीपुत्र थे, अब सरस्वती पुत्र हो गये हैं। अब उन्हें दुर्गापुत्र होने की जरूरत है और दुर्गापुत्र होने के लिए एक मात्र राजनीति में आना अत्यंत आवश्यक है। जिसकी राजनीति सुदृढ़ है उसकी धर्मनीति, अर्थनीति, समाजनीति अपने आप सुदृढ़ हो जाती है। मारवाड़ियों ने राजनीति में अपना अलग ही स्थान बना रखा है। अपने आत्म सम्मान व आत्म गौरव रक्षा के लिए हमें राजनीति में बढ़-चढ़ कर भाग लेना चाहिए।

सभा ने शुरूआत में एक मिनट का मौन रखकर श्री जयपत रामजी धानुका व स्व. मूलचंद जैन की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की गयी।

सभा ने एक प्रस्ताव पारित कर समाज के बंधुओं को राजनीति में आगे आने का आह्वान करते हुए मत तालिका में अपना नाम दर्ज करवाना, मताधिकार का प्रयोग करना, राजनीतिक कार्यकर्त्ता को तन-मन-धन से सहायता करना व प्रोत्साहन देना तथा महिलाओं को भी जागृत करने का आह्वान किया।

उक्त आयोजन स्थानीय अग्रवाल विवाह भवन के सभागार में आयोजित किया गया था।

शादी तथा अन्य कार्यक्रमों पर खर्च : आयकर विभाग की भूमिका

श्री नारायण जैन, इनकम टैक्स एडवोकेट

(श्री नारायण जैन को आयकर संबंधी विभिन्न विषयों पर समाज विकास में लिखने के लिए आमंत्रित किया गया है। -संपादक)

आयकर अधिनियम की धारा 133ए (5) के तहत आयकर अधिकारी को शादी व अन्य कार्यक्रमों पर किसी व्यक्ति द्वारा किये गये खर्च के संबंध में जानकारी हासिल करने का अधिकार है। करदाताओं को चाहिए कि ऐसे अवसरों पर किया गया खर्च आयकर रिटर्न के साथ दाखिल किये जाने वाले कैपिटल अकाउण्ट या बैलेंस-शीट में समुचित रूप से दिखायें।

सामान्यत: होटलों में शादी किये जाने पर देखने में आता है कि शादी के पश्चात लड़की व लड़के के पिताजी के पास खर्चे की जानकारी मांगते हुए आयकर विभाग से नोटिस आ जाती है। जिन बातों की जानकारी साधारणत: मांगी जाती है, उनमें निम्न बातें मुख्य हैं :-

1. दुल्हन व दूल्हे का? उसके माता-पिता व अन्य परिवार जनों का नाम, पता व परमानेंट अकाउण्ट नम्बर।
2. दुल्हन व दूल्हे के पिता का व्यापार, व्यवसाय या पेशा।
3. विवाह व अन्य संबंधित कार्यक्रम सम्पन्न होने का ठिकाना व उसके लिए चुकायी गयी भाड़े की राशि।
4. विवाह व अन्य कार्यक्रम में निमंतण किये गये अतिथियों की संख्या।
5. डेकोरेटर का नाम व ठिकाना तथा उसे डेकोरेशन के लिए दी गयी राशि।
6. फूलों की सजावट पर खर्च की गयी राशि।
7. केटरर का नाम व पता तथा खाने इत्यादि पर लिये गये खर्च की राशि।
8. शादी तथा फंक्शन के कार्ड छापने वाले प्रिंटर का नाम व पता एवं खर्च।
9. मोटर गाड़ी भाड़े पर ली गयी हो तो कार रेन्टल एजेन्सी का नाम व पता तथा खर्चे की राशि।
10. शादी के पूर्व विभिन्न मदों पर किये गये खर्च का विवरण।
11. सगाई व शादी पर दूल्हे-दुल्हन को दिये गये उपहारों का ब्यौरा।
12. फर्नीचर, ज्वेलरी, मेकअप, फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी व अन्य उपहारों पर खर्च।
13. बैंक पासबुक या बैंक स्टेटमेंट जो शादी या कार्यक्रम संबंधी खर्च दर्शाते हों या निकाली गयी नकद राशि उल्लिखित हो।
14. पिछले इनकम टैक्स तथा वैल्थ टैक्स रिटर्न की रसीद तथा साथ में दिये गये लाभ हानि खाते, बैलेंस शीट, कैपिटल अकाउण्ट, ज्वेलरी की वैल्युएशन रिपोर्ट आदि की कॉपी।

सलाह :

1. करदाता को आयकर विभाग से नोटिस या पत्र मिलने पर उसका समुचित पालन करते हुए जबाव देना चाहिए। हाजिर न होने तथा जवाब न देने से अधिकारियों के मन में शंका होनी स्वभाविक है। किन्हीं कारणों से निर्दिष्ट तारीखों को जाने में या कागजात दाखिल करने में असुविधा हो तो चिट्ठी देकर अगली तारीख निर्धारित करने की प्रार्थना करनी चाहिए।
2. नोटिस का जवाब देते समय मांगी गयी सूचना व उससे संबंधित कागजात नत्थी करके दाखिल करना चाहिए।
3. यदि शादी तथा अन्य कार्यक्रम संबंधी खर्च लड़की-लड़का के पिताजी के अलावा एच.यू.एफ. या अन्य व्यक्ति द्वारा वहन किया गया हो तो उसका ब्योरा व प्रमाण संलग्न करना बेहतर है।
4. यदि पुरानी ज्वेलरी के किसी मद को विवाह में दुल्हन को भेंट किया गया हो तो इस वैल्युयेशन रिपोर्ट का उल्लेख करते हुए साथ में दाखिल करें। पुरानी ज्वेलरी का उपयोग करते हुए उसे रिमेकिंग किया गया हो तो रिमेकिंग बिल भी नत्थी करें। ज्वेलरी खरीदी गयी हो तो उसके केशमेमों या निम्न की कापी देना लाभदायक है।
5. परिवार के अलावा अन्य व्यक्तियों से उपहार के रूप में मिली नकद, गिफ्ट चेक व ज्वेलरी या अन्य मदों का उल्लेख, गिफ्ट करने वाले व्यक्ति के नाम, पते व पैन नम्बर का विवरण देते हुए करें। संभव हो तो गिफ्ट वाले सज्जन से प्रमाण पत्र हासिल करें तथा नत्थी करें।

आयकर अधिकारी को किसी व्यक्ति का बयान (स्टेटमेंट) लेने का भी अधिकार है, लेकिन शादी तथा अन्य कार्यक्रम सम्पन्न हो जाने के बाद ही ऐसा बयान दर्ज किया जा सकता है। शादी या अन्य कार्यक्रम के दौरान ऐसा बयान नहीं दिया जा सकता।

शादी के दिन गिफ्ट आयकर से मुक्त :

सामान्यत: यदि किसी व्यक्ति से 25 हजार रु. से अधिक की राशि गिफ्ट के रूप में मिलें तथा ऐसा व्यक्ति निर्दिष्ट रिश्तेदार की श्रेणी में न आता हो तो ऐसी राशि को धारा 56 के तहत आयकर टैक्स लगाने का प्रावधान है, लेकिन शादी के अवसर पर 25 हजार रुपये से अधिक राशि भी एक-एक व्यक्ति से मिले तो उस पर उपरोक्त प्रावधान लागू नहीं होगा। ध्यान रहे कि इसका लाभ लेने के लिए गिफ्ट के रूप में राशि शादी के दिन मिली हुई होनी चाहिए न कि सगाई या अन्य अवसर पर। जो भी गिफ्ट मिले, गिफ्ट देनेवाले से सर्टिफिकेट या बड़ी राशि हो तो ऐफिडेविट ले लेना अच्छा है।

सारांश : करदाताओं को चाहिए कि आयकर विभाग से नोटिस आने का इंतजार न करके सभी खर्चे समुचित रूप से अपने खाते में दिखायें तथा जहां तक हो सके चेक से भुगतान करें।

बहु नहीं बेटी है, परायी नहीं अपनी है।

मारवाड़ी समाज की धरोहर-1

श्री विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल

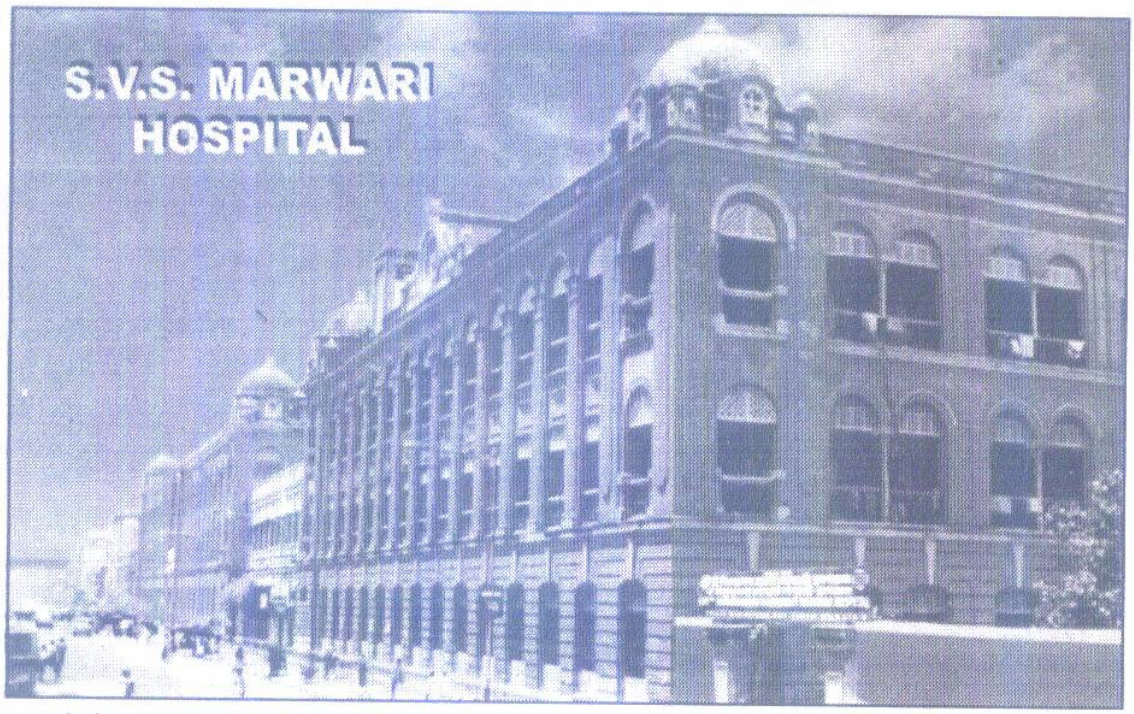

स्वामी श्री विशुद्धानन्द सरस्वतीजी महाराज की प्रेरणा "**सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय**" की भावना से प्रेरित होकर हमारे पूर्वजों ने सन् 1919 में इस अस्पताल की स्थापना की। इस अस्पताल के संस्थापक थे स्व० जुहारमलजी खेमका, स्व० रामजीदासजी वाजोरिया, स्व० रामेश्वर दासजी दुदवेवाला, स्व० केशोरामजी पोद्दार, एवं स्व० चिमनलालजी गनेरीवाल। इन लोगों ने समाज के सभी वर्गों से सहयोग लेकर इस अस्पताल का निर्माण किया। सहयोग दाताओं की सूची आज भी अस्पताल में सूचनापट्ट पर अंकित है। उस वक्त अंग्रेजी के शासनकाल में कलकत्ते के बड़े अस्पतालों में **श्री विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल** एक था। यह अस्पताल 118, अमहर्स स्ट्रीट (वर्तमान में राजा राममोहन राय सरणी) में करीबन 3 एकड़ जमीन पर स्थित है। इसके उत्तर भाग में केबिन एवं दवा विभाग, पश्चिम भाग में वातानुकूलित केबिन, रसायन, मलमूत्र परिक्षण विभाग, एवं मन्दिर तथा मध्य भाग में प्रशासनिक एवं अन्य समूचे विभाग अवस्थित है। इस अस्पताल में करीबन 200 रोगियों के इन्डोर इलाज की व्यवस्था है। इसके वार्ड में जितनी खुलासा एवं हवादार कमरों की व्यवस्था है उतनी कलकत्ते के और अस्पताल में नहीं है। जब से इस अस्पताल की स्थापना हुई तबसे स्व० रामजीदासजी वाजोरिया, स्व० केदारनाथजी पोद्दार नित्यप्रति रोगियों के समक्ष जाकर उनकी सुख सुविधाओं का ध्यान रखते थे, तत्पश्चात श्री पुरुषोत्तमजी पोद्दार एवं स्व० पुरुषोत्तमजी हलवासिया ने यह भार संभाला एवं नित्यप्रति सेवा भाव से समर्पित होकर रोगियों के समक्ष जाने लगे। कतिपय कारणों की वजह से यह अस्पताल सन् 1981 से सन् 1983 तक बन्द रहा एवं तत्पश्चात् स्व० पुरुषोत्तमदासजी हलवासिया के प्रसर प्रयत्नों से यह अस्पताल पुनः चालू हुआ जिसमें स्व० सत्यनारायणजी टांटिया अध्यक्ष एवं

स्व. केशोरामजी पोद्दार

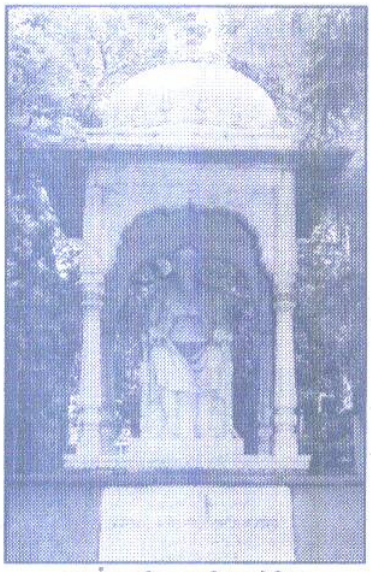

स्व. रामजी दासजी वाजोरिया

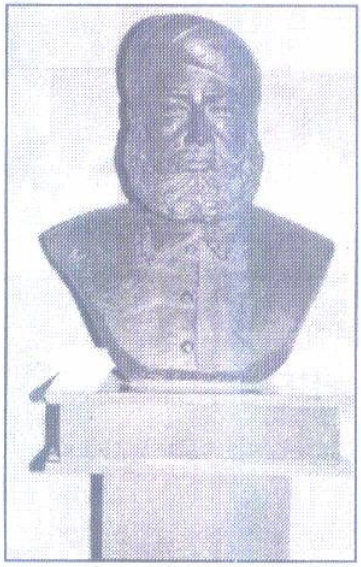

स्व. सेठ पांचीराम नाहटा

स्व० पुरुषोत्तमजी हलवासिया मंत्री बने एवं यह अस्पताल सुचारू रूप से चलने लगा।

वर्तमान में इस अस्पताल में 7 ट्रस्टी एवं 4 संरक्षक हैं इसके अध्यक्ष हैं श्री तोलारामजी जालान, श्री रविशंकर सराफ-मंत्री, श्री ओमप्रकाश रुईया-संयुक्त मंत्री, श्री हरिराम जालुका-अर्थविभाग। सहयोगी कार्यकर्ताओं में श्री आत्माराम काजड़िया-उपाध्यक्ष, श्री दुर्गा प्रसाद नाथानी, श्री बाबूलाल पारख, आदि है जो कि नित्यप्रति अस्पताल की देखरेख करके इसकी सर्वांङ्गिन उन्नति में अपना सहयोग प्रदान करने में सतत् प्रयत्नशील रहते हैं।

वर्तमान में इस अस्पताल के उत्तरी भाग में एक तिमंजिला बिल्डिंग है जिसमें प्रथम मंजिल में 20 साधारण केविन है जिसका शुल्क 250/- प्रति केविन है। द्वितीय मंजिल में 20 स्पेशल केविन है जिसका शुल्क 300/- प्रति केविन है एवं तृतीय मंजील में डिलक्स वातानुकूलित केविन 20 है जिसका शुल्क 650/- प्रति केविन है। यह शुल्क अन्य अस्पतालों की अपेक्षा अति सामान्य है। अस्पताल के मध्य भाग में Out door विभाग है जिसके अर्न्तगत सर्जीकल, मेडीकल, कैन्सर, ओर्थोपेडिक, महिला चिकित्सा, डायबिटिज कार्डियोलोजी, शिशु चिकित्सा, होमियोलोजी, आयुर्वेदिक एवं परिवार नियोजन विभाग है। इस Out door विभाग में 80 से ऊपर डाक्टर नित्यप्रति बैठते हैं जो अपनी अपनी विधाओं में प्रवीण है प्रात: 9 बजे से 12 बजे तक रोगीयों को देखकर उचित सलाह देते हैं वह भी सामान्य शुल्क पर। अस्पताल के मध्य भाग में नीचे तले पर Out door विभाग के अलावा इ. सी. जी., एक्स-रे, आल्ट्रा सोनोग्राफी, फिजीयोथेरेपी पुवा थिरेपी युनिट (सफेद दाग) शिशुओं की प्रतिरोधक टीका एवं आफिस अवस्थित है। इसके प्रथम तले पर पूर्ण आधुनिक वैज्ञानिक प्रद्धति एवं यंत्रों से लैस 3 आपरेशन थियेटर है जिसमें एक ही समय में एक साथ 3 आपरेशन किया जाता है। साथ ही 25 बेडों से युक्त खुला हवादार सर्जीकल पुरुष वार्ड है एवं संलग्न 25 बेडों का मेडीकल पुरुष वार्ड भी है। जहां डाक्टर नित्य सुबह एवं सांयकाल घूम के रोगीयों की सुख-सुविधा का ख्याल रखते हैं। इसी प्रथम तले के पश्चिम भाग ITU युनिट (इन्टेनसीन थेरेपी युनिट) अवस्थित जिसमें 10 बेड हैं एवं आधुनिक यन्त्रों से लैस है तथा सम्पूर्ण वातानुकूलित है। इसके दूसरी मंजील पर 25 बेडों का महिला सर्जीकल वार्ड एवं 25 बेडों का महिला मेडिकल वार्ड है। वर्तमान में आधुनिक यन्त्रों से सी. आर्म युनिट, आपरेशन थियेटर लेप्रोस्कोपी, युनिट, आई. टी. युनिट, सोनोग्राफी युनिट, आई माइक्रो सर्जरी युनिट, एक्स-रे युनिट को सुसज्जित किया गया है। अन्य अस्पतालों की अपेक्षा यहां हर विभाग का शुल्क अति सामान्य है। इसी मध्य भाग में नीचे तले पर नेत्र विभाग में आधुनिक पद्धतियों के द्वारा दक्ष चिकित्सकों की देखरेख में नेत्र चिकित्सा का समुचित प्रबन्ध है।

भवन के मध्य भाग में फूलों से लैस एक Lawn भी है। पश्चिमी भाग में रायबहादुर हजारीमल दुदवेवाला की धर्मपत्नी द्वारा निर्मित सत्यनारायण भगवान मन्दिर है, एवं शिव मन्दिर जहां सुबह एवं सायंकाल नित्यप्रति पूजा होती है। मंदिर के संलग्न रसायन विभाग है जहां नित्यप्रति 4 सुदक्ष वैद्यों की देखरेख में रोगियों को चिकित्सा एवं दवा वितरण की जाती है। यहां पर आयुर्वेदिक पद्धतियों के द्वारा शुद्ध आयुर्वेदिक दवाओं का निर्माण सुदक्ष निरीक्षकों की देखरेख में किया जाता है। यहां निर्मित च्यवनप्राश, आंवला केश तेल, लाल दन्तमंजन एवं चूर्णाधि अत्यन्त लोकप्रिय है।

आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि मारवाड़ी समाज की इस धरोहर की हम सब मिलकर आन रखते हुए इससे लाभान्वित होंगे। एवं इसकी उन्नति में सहभागी बनें।

श्री विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल

ट्रस्टीगण

श्री तोलारामजी जालान
श्री पवनकुमार कानोड़िया
श्री लक्ष्मीनिवास बांगड़
श्री अरुण कुमार बाजोरिया
श्री ईश्वरी प्रसाद पोद्दार
श्री विश्वम्भर दयाल सुरेका
श्री सीताराम भुवालका

संरक्षक

श्री मदनलाल पाटोदिया
श्री नन्दकिशोर जालान
श्री शिवप्रसाद बगड़िया
श्री कपूरचन्द गंगवाल

पदाधिकारीगण

श्री तोलाराम जालान
अध्यक्ष

श्री रविशंकर सराफ
प्रबन्ध मंत्री

श्री हरिराम जालुका
वित्तमंत्री

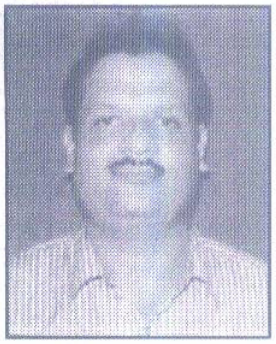

श्री ओमप्रकाश रुईया
संयुक्त मंत्री

श्री विश्वम्भर दयाल सुरेका
उपाध्यक्ष

श्री जगदीश प्रसाद चौधरी
उपाध्यक्ष

श्री आत्माराम काजड़िया
उपाध्यक्ष

श्री हरिप्रसाद कानोड़िया
उपाध्यक्ष

धरोहर

श्री विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी हास्पीटल

गत् नौ दशक से मध्य कोलकाता स्थित यह अस्पताल समाज के हर वर्ग के रोगियों की सेवा कर रहा है, अस्पताल में प्रतिष्ठित एवं सुयोग्य डॉक्टरों द्वारा हर तरह की चिकित्सका उपलब्ध है। अस्पताल में अत्याधुनिक मशीनों द्वारा ऑपरेशन एवं जाँच की सुविधा भी है।

वर्तमान सेवायें

अप्रवेशित विभाग :

1. सर्जिकल
2. मेडिकल
3. कैन्सर
4. ओर्थोपेडिक
5. महिला चिकित्सा
6. डायबिटिज
7. कार्डियोलोजी
8. शिशु चिकित्सा
9. होमियोपैथिक
10. चर्मरोग
11. नेत्र
12. दन्त
13. नाक-कान-गला
14. प्लास्टिक सर्जरी
15. न्यूरो सर्जरी
16. यूरोलॉजी
17. न्यूरोलोजी
18. आयुर्वेद
19. परिवार नियोजन

प्रवेशित विभाग

1. आई.टी.यू.
2. डीलक्स केबिन (एसी)
3. स्पेशल केबिन
4. जेनरल केबिन
5. महिला प्रसूति वार्ड
6. पुरुष मेडिकल वार्ड
7. पुरुष सर्जिकल वार्ड
8. महिला मेडिकल वार्ड
9. महिला सर्जिकल वार्ड
10. ऑपरेशन थियेटर तीन (एसी)

विशिष्ट सेवायें

1. एक्सरे यूनिट
2. पोरटेबल एक्सरे यूनिट
3. सोनोग्राफी
4. पैथोलोजी एवं हिस्टोपैथोलोजी
5. ई.सी.जी.
6. इको कार्डियोग्राम
7. इण्डोस्कोपी
8. फिजियोथिरेपी
9. पूवाथिरेपी (सफेद दाग)
10. बच्चों का टीकाकरण

कैन्सर रोग

हॉस्पीटल में डॉ. संजय दास के नेतृत्व में केमोथेरेपी (केन्सर किरण रे) से भी इलाज किया जाता है। डॉक्टर देवजीत दे एवं डॉक्टर प्रदीप रंजन कौर भी यहां मरीजों को देखने आते हैं।

डॉक्टरों की सूची

SURGICAL UNIT
1. Dr. Gopal Dave
2. Dr. S. K. Pramanik
3. Dr. P. K. Nemani
4. Dr. M. C. Jhunjhunwala
5. Dr. S. Deb
6. Dr. Tridib Sarkar
7. Dr. Sanjay Gupta
8. Dr. D. Chakraborty
9. Dr. A. Johri
10. Dr. J. Kothari

GENERAL OREDICAL UNIT
11. Dr. D. Chakraborty
12. Prof. Dr. T. P. Mukherjee
13. Dr. Probir Sinha Roy
14. Dr. Ajit Gupta

ORCOLOGY UNIT
15. Dr. A.P. Mazumdar
16. Dr. Anil Poddar
17. Dr. Debojit Dey, M.S.
18. Dr. Sanjoy Kumar Das
19. Dr. N. K. Sultania

GYNAE & OBST UNIT
19. Dr. Uma Kapoor
20. Dr. Abhijit Ghosh
21. Dr. Sarnita Pan
22. Dr. Asish Kr. Ghosh
23. Dr. Debasish Bhose
24. Dr. K. Pal
25. Dr. D. Roy
26. Dr. A. Ahmed
27. Dr. N. Bhattacharyay

ORTHOPAEDIC UNIT
28. Dr. Viond Kumar Nevatia
29. Dr. Adit Dey

UROLOGY UNIT
30. Dr. P. D. Saraf
31. Dr. S. D. Mukherjee
32. Dr. N. K. Mondal
33. Dr. Rajan Kr. Dey

PLASTIC SURGEON
34. A. K. Bhowmick
35. Dr. S. Mitra

E.N. T. UNIT
36. S. N. Mukherjee
37. Dr. A. C. Bagchi
38. Dr. Nirjhar Chanda

DENTAL UNIT
39. Dr. N. Bhattacharya
40. Dr. Santanu Roy

OPTHALMOLOGY UNIT
41. Dr. S. Chakraborty
42. Dr. Ajanta Sinha
43. Dr. Deepika Gupta
44. Dr. Santanu Gooptu
45. Dr. D. P. Bathwal

CARDIOLOGY UNIT
46. Prof. (Dr.) T. P. Mukherjee
47. Dr. G. M. Rohatgi
48. Dr. S. Pal
49. Dr. Saroj Soni
50. Dr. Sanjay Kr. Sonthalia
51. Dr. Nadim Akhtar Khan

CHEST UNIT
52. Dr. M. C. Pradhan
53. Dr. V. S. Baid

PSYCHIATRY UNIT
54. Dr. Sujata Ghosh

PAEDIATRIC UNIT
55. Dr. Bhaswati Chakraborty
56. Dr. S. K. Mitra
57. Dr. B. N. Roy

NEUROLOGY UNIT
58. Dr. A. R. Nandy
59. Dr. T. K. Das
60. Dr. B. Singhania
61. Dr. R. Nath

DIABETES UNIT
62. Dr. A. K. Jain

SONOGRAPHY UNIT
63. Dr. A. K. Agarwal
64. Dr. Amarendra Nath
65. Dr. Shashi panja

ECHO CARDIOGRAPHY UNIT
66. Dr. Saroj Soni

ENDOSCOPY UNIT
67. Dr. Dipak Shah

SKIN/PUVA UNIT
68. Dr. Bimal Roy Chowdhury

PATHOLOGY UNIT
69. Dr. G. C. Roy
70. Dr. Aditi Bhattacharjee

HOMOEPATHIC UNIT
71. Dr. Mrinmoy Mullick
72. Dr. S. N. Chandra
73. Dr. Tapas Kanta Sen

ANAESTHETIST
74. Dr. Manak Nemani
75. Dr. (Brigadier) Ranjit Ray
76. Dr. K. Kedia
77. Dr. M. K. Tiwari

AYURVEDIC UNIT
78. Dr. A. K. Jain
79. Dr. T. D. Gupta
80. Dr. N. K. Roy
81. Dr. M. Mohan

MEDICAL OFFICERS
82. Dr. C. B. Agarwal
83. Dr. S. K. Pal
84. Dr. A. Johri
85. Dr. A. Ahmed
86. Dr. A. K. ghosh
87. Dr. S. GanguIY
88. Dr. Pradhan

आयुर्वेदिक विभाग

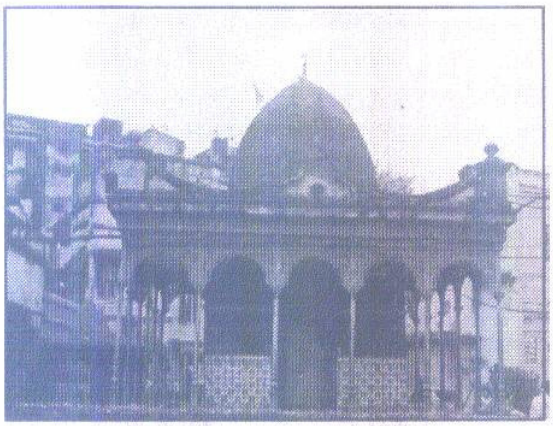

श्री सत्यनारायण भगवान का मंदिर।
रायबहादुर स्व. हजारीमल जी दुदवेवाला की धर्मपत्नी द्वारा निर्मित

श्री ईश्वरी प्रसाद पोद्दार

श्री विशुद्धानंद सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल से लगातार कई वर्षों से जुड़े रहे श्री ईश्वरी प्रसाद जी पोद्दार के मन में आज भी मरीजों के प्रति वही दर्द एवं पीड़ा देखने को मिली। विद्वतापूर्ण अपने संक्षिप्त वार्तालाप में अस्पताल की उन्नति के प्रति चिन्तित नजर आये। हमलोगों ने अपने परिवार का रहन-सहन बदल डाला, सोच बदल डाली, यह बात मानते हुए कि अस्पताल की सोच सेवा भावना है, गरीबों की सेवा करना ही उद्देश्य हैं परन्तु आज हर व्यक्ति अच्छा इलाज चाहता है, पुरानी चिकित्सा व्यवस्था से भले ही वह गरीब हो-संतुष्ट नहीं हो सकता, अत्याधुनिक उपकरणों से इलाज को सरल बनाया जा रहा; पहले चिकित्सकों के खर्च बहुत कम थे, वे नि:स्वार्थ भाव से कार्य करते थे, परन्तु आज यह न तो उनके लिए संभव है, न ही हमें ऐसी अपेक्षा ही रखनी चाहिए। मेरी समझ में शहर के तीनों मारवाड़ी संचालित अस्पताल **मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी** एवं **बड़तल्ला अस्पताल,** की प्राय: एक सी ही स्थिति बनी हुई है जिसमें सबसे दयनीय स्थिति इस अस्पताल की है। आज की सोच को किस तरह मूर्त रूप दिया जा सके, इसे हमें जल्द ही सोचना चाहिये। अस्पताल के खर्च रोजना बढ़ते जा रहे हैं, दूसरी तरफ सेवा की भावना आधुनिकतम इलाज इन सबको मद्देनजर रखते हुए अस्पताल को "**आर्थिक आधारभूत परिपूर्ण सह सेवा संस्थान**" के रूप में परिवर्तित कर देना चाहिए।

हालांकि मेरे पिता जी के जो विचार रहे हैं वे मेरे विचार से, एवं आज के युवा वर्ग के विचार मेरे से भिन्न हो सकते हैं, वे लोग मरीजों को आत्मसात कर लेते थे - जो आज के युग में संभव नहीं है। यह एक बड़ा द्वंद्व है। सलाह देना या किसी के क्रिटीसाइज करना बहुत आसान काम है परन्तु इतने बड़े समाज के हॉस्पीटल को इतने बड़े घाटे के साथ चलाना सच में पूछा जाए तो आज के युग में असंभव सा लगता है।

समाज के साथ-साथ इसमें भी बदलाव लाना ही चाहिए। इसे ऐसा अस्पताल बनाया चाहिए जिसकी सेवा कम खर्च में आधुनिकतम सेवा प्रदान कर सके एवं संस्था में आय का स्रोत भी बना रहे।

श्री नन्दकिशोर जालान

सामाजिक क्षेत्र में श्री नन्दकिशोर जी जालान को देश के प्राय: सभी प्रांतों में मारवाड़ी समाज को संगठित करने का बहुत बड़ा योगदान जाता है। अपने जीवन के लगभग 40 साल से अधिक इन्होंने मारवाड़ी समाज को संगठित करने में लगाया। श्री जालान जी के सहयोग एवं असम के युवा साथियों का ही योगदान है कि आज मारवाड़ी युवा मंच देश भर में लगभग 500 शाखाओं के साथ कार्यरत हैं। इनकी सोच में जो दूरदर्शिता देखने को मिलती है वह आज भी 80 की उम्र में तरोताजा है। इन दिनों आप घुटने में तकलीफ होने के चलते पूर्ण रूप से घर पर ही रहते हैं। उम्र के इस पड़ाव पर उनसे विशुद्धानंद सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल की बात की तो उनकी याद ताजा हो गयी। आप राधाकृष्णजी कानोड़िया के विशेष अनुरोध पर जब अस्पताल के कार्यक्रमों से जुड़े। सन् 1973 में स्व. सत्यनारायण टांटिया जी के साथ सहमंत्री बनाये गये, उस समय अस्पताल के बहुत तरह के सुधार कार्यक्रम हाथ में लिये गये। स्वभाव से मृदुभाषी श्री जालानजी के इन कार्यक्रमों को संचालित करने के लिए स्व. कानोड़िया जी ने कई लोगों के अलावा बिड़ला परिवार से भी धनराशि अस्पताल को अनुदान में दिलायी, श्री जालान जी के अथक प्रयास से शहर के कई नामी डॉक्टरों को इस संस्थान में जोड़ा गया। उस समय के अनुसार आधुनिकतम एक्सरे मशीन, पैथोलॉजी विभाग के साथ-साथ अन्य जांच विभागों का नवीनीकरण/आधुनिकीकरण करवाया गया। सन् ~~1982~~ 1987 में आपको अस्पताल का मंत्री पद परभार

दिया गया। उस समय हॉस्पीटल में 15-20 लाख प्रतिवर्ष का घाटा चल रहा था। स्व. घनश्यामदास जी बिरला जी को भी अस्पताल का निरीक्षण कराकर उनसे भी सहयोग की अपेक्षा की गयी। श्री जालान जी अपनी याददास्तों को परत-दर-परत तरासते ही चले गये जैसे मानो उनकी आत्मा में अस्पताल बसा हो। इतिसास के कई पन्ने लेखक के सामने पलट दिये। बताते हैं कि उस समय कई प्रकार के प्रयत्नों एवं नये निर्माण कार्यों से अस्पताल की प्रतिष्ठा में काफी इजाफा हुआ। केबिन का नवीनीकरण, छत पर जो रसोईघर था (एक समय ब्राह्मणों या घर के लोगों द्वारा बनाया खाना ही अस्पताल में मरीजों को दिया जाता था) जिसे तुड़वाकर डिलक्स कैबिन बनवाये गये। बादामी देवी मेमोरियल 10 बेडों का आईटीयू कक्ष बनवाया गया। भवन का दक्षिणी भाग पूर्णतः आयुर्वेदिक विभाग का था जिसे बंगाल सरकार ने होम्योपैथी इलाज कराने के नाम से अधिग्रहण कर रखा था, परन्तु वहाँ इस तरह की कोई व्यवस्था नहीं कर पाने से भारत सरकार के तत्कालीन स्वास्थ्य मंत्री श्री मोतीलाल वोरा के सहयोग से उस अधिग्रहण को रद्द करवाकर पुनः अस्पताल के अधीन ले लिया गया है। तत्काल ही हमलोगों ने इस भाग में एक्सरे व अन्य आउटडोर के कुछ विभाग चालू कर दिये। अनेकानेक नामी डॉक्टरों के सहयोग जिसमें कैंसर के जाने-माने डॉक्टर ए. पी. मजुमदार को अस्पताल से जोड़ा गया। मरीजों की संख्या में काफी इजाफा भी होने लगा। हमलोगों का उत्साह काफी बढ़ चुका था। बदली हुई स्थिति एवं ख्याति के कारण हमें भी इसमें कार्य करने में काफी संतोष मिल रहा था। कई बार तो वार्ड में जगह की कमी के कारण अन्य जगह भी बेडों का इंतजाम करना पड़ा था। तत्कालीन सभापति [illegible]. नथमल जी भुवालका ने कहा था कि अस्पताल का प्रतिवर्ष का घाटा 15-20 से घटकर दो-ढाई लाख पर आ गया है इससे सभी में उत्साह की लहर दौड़ पड़ी थी। बाद में सन् 2000 में आपको उपसभापति एवं वर्तमान में आप अस्पताल के संरक्षक हैं। आपका मानना है कि अस्पताल को आज के युग के अनुसार न सिर्फ आधुनिक एवं आयन्मुख भी बनाना चाहिए।

दुर्गा प्रसाद नाथानी

स्व० पुरुषोत्तमदास हलवासिया के समय से ही 1983 से आप इस अस्पताल से जुड़े हुए हैं। सन 2006 से रोजना सोमवार से शुक्रवार सुबह 9 बजे से दोपहर एक बजे तक कार्य देखते हैं। राजनैतिक व सामाजिक जीवन में आपका जीवन सदैव प्रेरणा का स्रोत बना रहा। आपका विचार है कि अस्पताल की व्यवस्था को सेवा उन्मुख के साथ-साथ आय की भी सुचारू व्यवस्था होनी चाहिए, लगातार चन्दा से किसी भी संस्था को जीवित रखना अत्यन्त ही कठिन काम है। आज यह 100 करोड़ से भी ऊपर की सम्पत्ति है। यह मारवाड़ी समाज की सम्पत्ति है। इससे मारवाड़ी समाज की यादें जुड़ी हुई हैं। पुराने समय में इलाज मंहगा नहीं था, परन्तु आज के युग में अत्याधुनिक उपकरण से इलाज होने लगा जो काफी महंगा है, इसके लिए हमें मुफ्त ईलाज करने की व्यवस्था पर पुर्नविचार करना ही होगा। धीरे-धीरे हम प्रत्येक विभाग में सुधार करते जा रहे हैं, परन्तु महंगे उपकरण के साथ-साथ वर्तमान व्यवस्था में और भी सुधार की आवश्यकता पर आपने जोर देकर कहा कि हमारे समाज में कई नये उद्योगपति सामने आये हैं उनको आगे आना चाहिए ताकि हम हमारे पूर्वजों की चलाई गयी सेवाभाव की परम्परा को बरकरार रख सकें। तीन एकड़ जमीन में फैली इस सेवा स्थान का विशाल भवन बीस फीट की हाईट का तीन मंजीला मकान कोलकाता महानगर की कई यादों की अपने में आप में समेटे अस्पताल के प्रायः सभी डाक्टर समर्पित भाव से जुड़े हुए हैं। हम लोगों का प्रयास है कि समाज के सहयोग से इसे नया स्वरूप प्रदान करें, कम खर्च में आधुनिक चिकित्सा प्रदान की जा सके; रोगी को न सिर्फ उनके रोग बल्कि कई बार हमें उनके परिवार की भी सहायता करनी पड़ती है। डाक्टर जब उसके रोग की देख-रेख करते हैं उस समय हम उनसे मिलकर उनके दुःख-सुख का हाल भी जानकर उसे आर्थिक सहयोग प्रदान करते हैं। पूर्णतः सेवाभाव से संस्था के सभी लोग कार्य करते हैं। स्व० रामजीदास बाजोरिया जी तो अपने घर को ही त्याग कर हॉस्पीटल की सेवा में लगे रहते थे।

40-50 रुपया रोजाना में आज भी यहां रहना, खाना, पीना व डाक्टरों की देखभाल संभव है। भवन का एक भाग द्वितीय विश्वयुद्ध (Second World War) के समय सरकार ने ले लिया था जो सन 1990 में सरकार से वापस मिल गया है। हमारा यह प्रयास होगा कि उस ईमारत को नया स्वरूप प्रदान कर उसमें अत्याधुनिक हॉस्पीटल बनाने का है। कुछ विशेषज्ञों को भी जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं। देश के कुछ उद्योगपति का सहयोग रहा तो शीघ्र ही हम इस कार्य को आगे बढ़ा पायेंगे, इसके लिए हम सभी का स्वागत भी करते हैं।

रविशंकर सराफ

सन् 1995 में स्व० नारायण प्रसाद खेतान ने मुझे इस संस्था से जोड़ा। इसके साथ ही स्व० पुरुषोत्तम जी हलवासिया, और श्री ईश्वरी प्रसाद जी पोद्दार के साथ काम करने का अवसर मिला। श्री पोद्दार जी की अनुपस्थिति में उनके कार्य को देखने का मेरे ऊपर दबाव बढ़ता गया एवं सन् 1998 से मुझे सर्वसम्मति से सचिव पद पर कार्यभार दिया गया जिसे मैं आज तक देख रहा हूँ।

मेरे सचिव बनने के बाद हॉस्पीटल के विकास के लिए काफी विचार-विमर्श हुआ और इस दिशा में हमने कई कदम भी उठाये हैं। आर्थिक समस्या को झेलते हुए भी हमलोगों ने अस्पताल की उन्नति के लिए नये-नये उपकरणों का खरीदना जारी रखा है, डाक्टरों का सहयोग लिया। यदि सच बोला जाए तो यह कटु सत्य है कि इन उपकरणों के बावजूद भी हम महसूस करते हैं कि समय के अनुकूल हमारा यह अस्पताल अभी भी कई सुविधाओं से सुसज्जित नहीं हो

महिला वार्ड

पाया है। अस्पताल में विकास की भी काफी जरूरत है, हमारी टीम में श्री तौलारामजी जालान (सभापति), एवं कार्यकारिणी सदस्यों में श्री हरिराम जालूका, श्री आत्माराम जी काजड़िया, श्री दुर्गाप्रसाद नाथानी, संयुक्त मंत्री श्री ओम रूईया एवं श्री बाबूलाल पारिक का सहयोग निरन्तर मिलता रहा है।

चिकित्सा विभाग में हमारे सुपरिटेन्डेंट डाक्टर गोपाल दवे व अन्य सभी डाक्टरों का कर्मचारियों सहित स्थानीय लोगों का सहयोग हमें मिलता रहा है।

हाँ एक बात जरूर है कि अभी इस अस्पताल में विकास की काफी संभावनाएं हैं, हम लोग इस दिशा में प्रयासरत भी हैं, नये से नये उपकरणों से इस अस्पताल को कितनी जल्दी और किस तरह लैस किया जाए इसका प्रयास भी जारी है, मैं समाज के सभी भाईयों से भी अनुरोध करूँगा कि इस भाईचारे की संस्था को अपना महत्वपूर्ण सहयोग दें एवं इसके शुभ संचालन में भी सहयोग बटायें।

डॉ० गोपाल दवे

इस हॉस्पीटल के साथ मैं 1975 से जुड़ा हूँ। शुरुआत कुछ साल मैंने Ressident Surgeon के रूप में कार्य शुरू किया, वर्तमान अस्पताल के Medical Superitendent के रूप में कार्यरत हूँ, साथ ही General Surgeon के रूप में भी सेवा प्रदान करता हूँ।

मेरा अनुभव है कि इस अस्पताल में हमेशा से ही बहुत ही अल्प खर्च में चिकित्सा की सुविधा प्रदान की जाती है। विशेष कर जाति या वर्ग के बिना किसी भेद-भाव, कोई भी साधारण तबका का मरीज बड़ी सरलता से यहाँ ईलाज करा सकता है। यहां का ऑपरेशन थियेटर आधुनिक एवं सभी उपकरणों से सुसज्जित हैं, General Surgury,Keyhole Surgury, पेशाब के रास्ते में कठनाई होने पर, कैन्सर आदि सर्जरी की यहाँ उपयुक्त व्यवस्था है। महिला विभाग, जच्चा-बच्चा, एवं शिशु विभाग भी यहां चलाया जा रहा है। बच्चों को निःशुल्क टिकाकरण, ICCU, ITU, द्वारा गहण चिकित्सा की व्यवस्था उपलब्ध है। Neurology एवं डाइवेटिज के रोगियों की भी उचित चिकित्सा की जाती है।

परन्तु डा० दवे का यह भी मानना है कि समय के साथ ताल मिलाने के लिए आधुनिक उपकरणें जैसे C.T. Scan, MRI, Digital Xray, Vedeo-Endoscopy, जैसे और भी कई उपकरणों की जरूरत है, यदि इसकी व्यवस्था हो जाती तो हमारी कार्य करने की क्षमता कई गुणा बढ़ जायेगी।

डा० पी. के नेमानी ने इस क्रम में अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा कि इस अस्पताल को और भी अधिक उपकरणों के साथ-साथ Pre-opration एवं Post Operation की कई सुविधाओं से लैस किये जाने की जरूरत है। आप शहर के जाने माने General Surgeon हैं। ऑपरेशन थियेटर के निरक्षण के दौरान जब आप

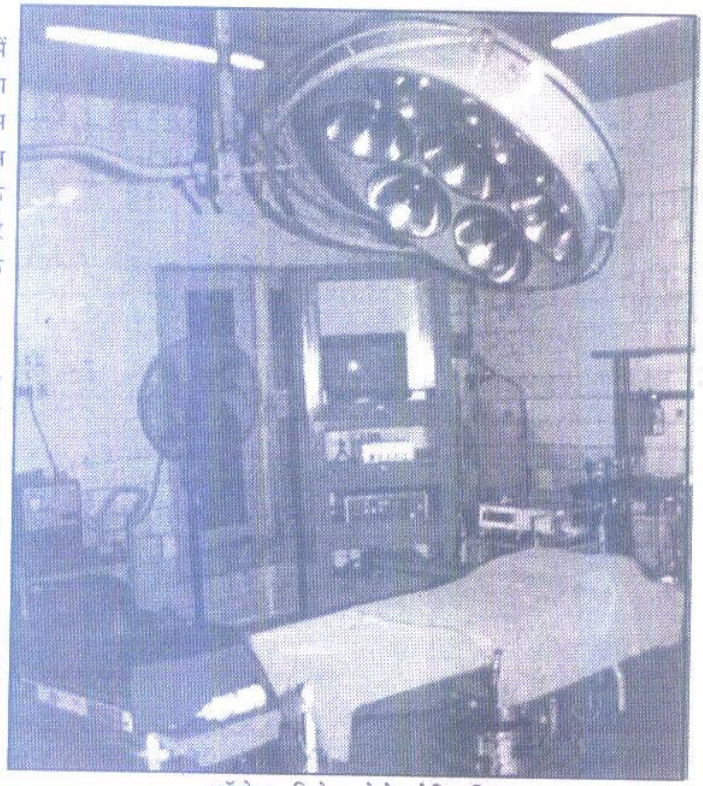

ऑपरेशन थियेटर लेप्रोस्कोपि यूनिट

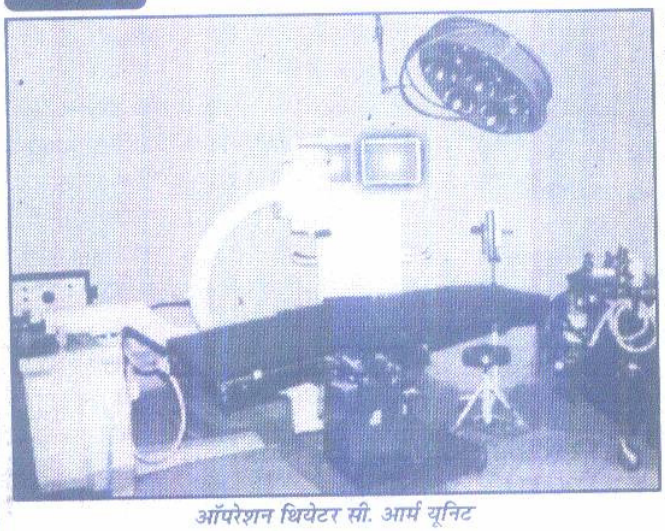

ऑपरेशन थियेटर सी. आर्म यूनिट

ऑपरेशन कक्ष से बाहर आकर कपड़े बदल रहे थे- तो इस लेखक से इनकी मुलाकात हो गयी, उनका मानना है कि समाज के पास इतना धन है जो विवाह-शादियों में बर्बाद होता है यदि उसका थोड़ा भी हिस्सा इस सेवा संस्था को मिल जाए तो यह सभी सुविधाएँ यहां उपलब्ध हो सकती है। हॉस्पीटल प्रांगन में भगवान शिवजी का मंदिर एवं भगवान सत्यनारायणजी का मंदिर भी है। प्रांगण में प्रवेश करते ही सामने आयुर्वेद विभाग भी बना हुआ है। जहाँ सीताराम पंडित से मुलाकात हुई, आपने बताया कि यहां का लवन भास्कर चूर्ण, व च्यवनप्रास काफी-प्रचलित है। इसका सेल्स का काम श्री अमरदेव सिंह देखते हैं। हॉस्पीटल के पास तीन Xray Machine भी है जिसकी देख रेख श्री शीतल चन्द माइती एवं श्री नवो कुमार पाल करते हैं। हॉस्पीटल में 40 वर्षों से कार्यरत सिस्टर संध्या घोष, एवं शोभा पाल, फिजियोथरोपी विभाग में श्री अफसर हुसैन, पेथोलोजी विभाग में श्री अनील साहा एवं रंजित विश्वास जो कि 20-22 साल से कार्यरत हैं। भवन के पास अपना रसायन शाला, दवा की दुकान, PCO जो 24 घंटा मरीजों के लिए उपलब्ध है। भवन के पास 2000 स्क्वायर फुट का एक बड़ा सा सभागार भी है।

आउटडोर में रोजाना 150-200 मरिजों को देखा जाता है। डा० नेमानी का मानना है कि इस सेवा में और वृद्धि होनी चाहिए चूँकि आउटडोर सेवा से ही Ward में मरीजों को आना जारी रहता है। हॉस्पीटल के विकास के साथ साथ आउट डोर सेवा को और अधिक उपयोगी बनाना चाहिए। भवन का एक नीचला तल्ला Out door मरीजों से भरा रहता है वहीं ऊपरी दो तल्लों में प्रथम तल्ला में पुरुष एवं 2nd floor में महिलाओं का Ward है। पास के एक तीन तल्ला भवन में Cabin Ward , ICCU, ITU बना हुआ है। भवन का एक बहुत बड़ा भाग- जो विश्वयुद्ध के समय सरकार ने ले रखा था वह अभी खाली पड़ा हुआ है। इस स्थान में नये निर्माण कर अत्याधुनिक अस्पताल बनाने का प्रयास जारी है। भवन के प्रांगण में रामजीदासजी बाजोरिया की एक विशाल प्रतिमा भी लगी हुई है जो स्वयं में कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बनी रहती है। भवन की दीवारों में सभी दानदाताओं के बड़े-बड़े पत्थरों में अंकित उनके नाम उनके द्वारा दान की गयी राशि का भी जिक्र है।

हॉस्पीटल का पूरा भवन न सिर्फ मारवाड़ी समाज की कोलकाता महानगर की भी धरोहर है।

समाज का थोड़ा सा योगदान इस हॉस्पीटल में नयी-जान डाल सकती है, बस देर है तो हमें अपना ऋण अदा करने की। संस्था के सभी पदाधिकारी आपके सहयोग की अपील भी करते हैं। संस्था का सम्पर्क पता :-

श्री विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल
118, राजाराममोहन सरणी, कोलकाता-700009

धन्यवाद

श्री आत्माराम तोदी

इस लेख को तैयार करने में कोलकाता के सुपरिचित समाजसेवी श्री आत्माराम तोदी का मुझे भरपूर सहयोग मिला। संस्था के अध्यक्ष श्री तोलारामजी जालान शहर से बाहर रहने के कारण उनसे सम्पर्क नहीं हो सका। लेख के दौरान सभी पदाधिकारियों का विशेष सहयोग हेतु धन्यवाद। -शंभु चौधरी, सहयोगी संपादक

परिचय

पुरुषोत्तम केजरीवाल

नथमल केडिया

बात 1939 की है। कलकत्ता महानगर की पुरानी व प्रतिष्ठित सेवा-संस्था **मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी** का वार्षिक चुनाव हुआ और और उसमें पुरानी पीढ़ी की जगह नई पीढ़ी के लोग विजयी हुए। इस तरह सोसाइटी के संचालन का भार नहीं नई पीढ़ी के हाथ में आया। नई पीढ़ी में राधाकृष्ण नेवटिया व बजरंगलाल लाठ नेता गिने जाते थे। उस चुनाव में चुने जाने पर नई पीढ़ी में बहुत उत्साह था पर सभी की सोच रचनात्मक थी। हम ज्यादा से ज्यादा काम कर दिखाए यह भावा थी। उन दिनों बड़ाबाजार में, मतलब महानगर के हिंदी क्षेत्र में दो ही दैनिक अखबार प्रकाशित होते थे—एक विश्वमित्र दूसरा लोकमान्य। ये दोनों भी पुरानी और नई पीढ़ी के पृष्ठ-पोषण में बंट गए थे।

बहरहाल पुरुषोत्तम केजरीवाल उसी चुनाव में मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी से, उसके विभागीय मंत्री के रूप में जुड़े। उसके हर पद पर रहकर सेवा की। इतनी लंबी अवधि तक किसी एक सेवा संस्था से जुड़कर सेवा करते रहना किसी के भी जीवन की संतोषजनक उपलब्धि हो सकती है। स्वभाव से स्मित-मुख, मधुर व्यवहार और किसी भी अच्छे कार्य से जुड़ने की ललक जैसे गुण केजरीवाल जी को प्रकृति-प्रदत्त हैं। इसीलिए उच्च शिक्षा प्राप्त न होने पर भी उन्होंने व्यापार व समाज में प्रचुर प्रतिष्ठा अर्जित की है। उनको उच्च शिक्षा प्राप्त होती भी कैसे? बहुत छोटी अवस्था, एक तरह से किशोरावस्था पार करने के साथ ही उन्होंने परिवार के भरण-पोषण के लिए काम करना शुरू कर दिया था। कहना नहीं होगा, इनके परिवार की आज की समृद्धि इनके परिश्रम व लगन से ही निर्मित हुई है।

केजरीवाल जी में आत्म-प्रचार से दूर रहने का भाव बहुत गहरे तक है। 1950 में असम में बहुत भयंकर बाढ़ व भूकंप का प्रकोप हुआ था। और बहुत बड़ी संख्या में लोग उससे प्रभावित हुए थे। बाढ़ की विभीषिका इतनी प्रचंड थी कि कार्यकर्ताओं की जान की जोखिम भी थी और हुई भी-स्थानीय सेवा संस्था **काशी-विश्वनाथ सेवा समिति** के एक कार्यकर्ता डूब गए थे। मारवाड़ी सोसाइटी ने उस समय बाढ़ग्रस्त लोगों को राहत पहुंचाने के लिए बड़े पैमान पर सेवाकार्य किया था। उस समय तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने उस बाढ़ग्रस्त इलाके का दौरा किया था। सोसाइटी के कार्यकर्ता दल का नेतृत्व श्री केजरीवाल कर रहे थे और वे जवाहरलाल जी के दौरे के समय उनके साथ थे। उस वक्त एक लकड़ी के चरमराते पुल पर से गुजरते हुए केजरीवाल जी व जवाहरलालजी की साथ-साथ तस्वीर देश के सभी बड़े व छोटे अखबारों के पहले पन्ने पर छपी थी। इतना ही नहीं, वह तस्वीर हर शो के पहले सिनेमा हॉल के पर्दे पर भी दिखाई गई थी। लेकिन आज केजरीवाल जी के पास इतनी महत्वपूर्ण तस्वीर भी नहीं है। जबकि दूसरा कोई होता तो उसे सहेज कर रखता और लोगों को दिखला कर गर्वित होता। आत्म प्रचार से इस तरह अनासक्त है केजरीवाल जी।

कलकत्ता की शिक्षण संस्था 'ज्ञान भारती' को ही लें। ज्ञान भारती की स्थापना व यह रूप देने में इनका कितना योग है। एक तरह से कहा जा सकता है कि केजरीवाल जी नहीं होते तो शायद ज्ञान भारती का अस्तित्व कागजों में ही रह जाता। कम से कम जिस जमीन पर उसकी दो भव्य इमारते खड़ी हैं, वह जमीन तो नहीं ही खरीदी जाती। और भी कि इसके बाद इसके प्रत्येक कार्य में इनका भरपूर सहयोग मिलता रहा है। सबसे बड़ी खूबी यह कि इन्होंने कभी इसका सभापति व ट्रस्टी बनना नहीं चाहा। ज्ञान भारती के जीवन के 30-32 वर्ष हो जाने के बाद लोगों ने स्वत: इनको सभापति व ट्रस्टी चुनकर अपने कर्तव्य का पालन किया।

बड़ाबाजार की तीसरी बड़ी संस्था-बड़ाबाजार युवक सभा में केजरीवाल जी बचपन से ही व्यायाम करने जाते थे और उसके बाद तो ये उसकी प्रत्येक आवश्यकता के समय आगे बढ़कर उत्साहपूर्वक सहयोग करते रहे। यद्यपि केजरीवाल जी साहित्यिक नहीं हैं पर साहित्यिक संस्था अर्चना से ये उसके जन्मकाल से ही जुड़े रहे। कुछ समय तक ये इसके अध्यक्ष भी रहे और प्रत्येक गतिविधि में इनका सक्रिय सहयोग व उत्साहवर्धन प्राप्त होता रहा है। बड़ाबाजार में कलकत्ता कारपोरेशन के कौंसिलर के रूप में की गई इनकी जनसेवा को लोग आज भी याद करते हैं।

50-60 वर्ष पहले मारवाड़ी समाज में पूरी तरह पर्दा प्रथा थी। पर्दे की शुरुआत विवाह के अवसर पर ही होती थी। उस समय समाज के कुछ नवयुवक ने भंवरमल सिंघी के नेतृत्व में इस प्रथा को हटाने के लिए जोरदार आंदोलन किया। सत्याग्रह तक किया। उसमें भाग लेने वालों ने प्रथम यह प्रतिज्ञा तो की ही कि वे स्वयं अपनी धर्मपत्नी का घूंघट हटा देंगे और जो विवाह पर्दा प्रथा को बरकरार रखते हुए होता हो, फिर चाहे अपने नजदीकी आत्मीय का ही क्यों न हो, उसमें शामिल नहीं होंगे। श्री केजरीवाल ने उसमें निष्ठा व उत्साह के साथ भाग लिया।

पुरुष चाहे कितनी ही बड़ी उम्र का क्यों न हो, दूसरा विवाह कर सकता है और लड़की 13-14 वर्ष की भी विधवा हो तो आजन्म अविवाहित रहेगी- इस दर्दनाक व पक्षपातपूर्ण स्थिति से मर्माहत होकर **'विधवाओं का पुनर्विवाह हो'** यह प्रचार करने में समाज में रामेश्वर टांटिया व पुरुषोत्तम केजरीवाल ने अग्रणी भूमिका निवाही। इन्हीं के अथक कार्यों को परिणाम है कि आज अधिकतर लड़कियां विधवा होने पर पुनर्विवाह करके जीवन पथ को सुखपूर्वक पार करती हैं।

पितामह ने कहा

(बंशीलाल बाहेती)

पितामह भीष्म शर शैय्या पर पड़े पड़े समय का इन्तजार कर रहे थे—अपने पिता से उन्हें इच्छा-मृत्यु का वरदान मिला था और इसीलिए वे देह त्याग के लिए सही समय और शुभ मूहर्त्त की काल गणना में तब्दील हो गए। इसी अवस्था में अपने पूर्व जन्म का उन्हें स्मरण हो आया—वे पूर्व जन्म में द्यौनामक बसु थे अपने भाइयों के साथ उन्हें वरुण पुत्र वशिष्ठ मुनि की परम पवित्र और कामधेनु की पुत्री नंदिनी का मुनि के आश्रम से अपहरण कर लिया था। ऋषि के शाप से उन्हें मनुष्य जन्म लेना पड़ा परन्तु बाकी सात भाइयों की (मुक्ति तो जल्दी हो गई किन्तु द्यौनामक बसु लम्बे समय तक मृत्यु लोक में मनुष्य रूप से रहने को आपित था- यही बसु महाभारत का महानायक पितामह भीष्म बना। इसी प्रकार ब्रह्माजी के द्वारा गंगा को भी श्राप मिला था और स्वर्ग से लौटते हुए वसुओं से मुलाकात के समय गंगा ने उन्हें अपनी कोख से जन्म देने और तत्काल मनुष्य योनि से मुक्त करने का आश्वासन दिया था। किन्तु द्यौनामक वसु को वशिष्ठ मुनि के श्राप के कारण चिरकाल तक मनुष्य लोक में रहना था और इसीलिए गंगा के प्रस्थान के बाद उनका यह पुत्र देवव्रत के नाम से प्रतिष्ठित हुआ और अपने पिता राजा शान्तनु के सम्मान रक्षा के लिए जो भीष्म प्रतिज्ञा की उससे वे सदैव के लिए उसे पितामह भीष्म बन गए।

अपने अतीत की स्मृतियां उन्हें याद दिला रही थी कि किस प्रकार भगवान् श्रीकृष्ण और बलरामजी ने जरासंध की वृहत्त सेना का संहार किया था और वे विजयी हुए थे। कंस को मारने से जरासंध बेहद क्रोधित हुआ था और अपने परम मित्र की मौत से आहत जरासंध ने मथुरा पर आक्रमण कर दिया था- मथुरा छोटा राज्य था, तय किया गया कि सहायता के लिए कुसवंश के सम्राट धृतराष्ट्र से सहायता का अनुरोध किया जाये। उस समय हस्तीनापुर की गद्दी पर धृतराष्ट्र आसीन थे। मथुरा से अक्रूरजी को दूत बनाकर हस्तीनापुर भेजा गया- उन्होंने सम्राट धृतराष्ट्र से सहायता का आग्रह किया सभास्थल पर स्वयं पितामह भीष्म, आचार्य द्रोण, कुलगुरु कृपाचार्य एवं महात्मा विदुर जैसे नीतिज्ञ एवं अनेकों रथि एवं महारथि उपस्थित थे परन्तु शकुनि की कुटिलता और दुर्योधन-दुशासन आदि के दबाव में मथुरा का जरासंध के विरुद्ध सहायता देने का आग्रह ठुकरा दिया गया। उन्हें स्मरण हुआ कि बाद में किस प्रकार स्वयं वासुदेव कृष्ण और श्री बलरामजी ने जरासंध की सम्पूर्ण सेना का विध्वंश किया और चाहते तो जरासंध का वध कर सकते थे। परन्तु श्री कृष्ण ने ऐसा इसलिए नहीं किया कि पराजित जरासंध अपने अपमान का प्रतिशोध लेने फिर उन लोगों को संगठित करेगा जो आसुरी वृति के हैं और दंभ तथा घमंड से ग्रस्त हैं। और इस प्रकार जरासंध ने फिर आक्रमण किया और पुनः दानवी वृत्ति वाले हजारों लाखों लोग मृत्यु को प्राप्त हुए। पितामह इस घटना को याद करके रोमांचित थे और श्री कृष्ण के प्रति उनके मन में अपार आदर और समान के भाव बढ़ रहे थे। उन्हें अहसास हुआ कि पृथ्वी पर से अत्याचार, अन्याय और असत्य का नाश करने के लिए ही श्रीकृष्ण ने अवतार लिया है।

इधर पितामह श्रीकृष्ण का स्मरण कर रहे थे और दूसरी तरफ स्वयं श्री कृष्ण पितामह को देखने के लिए आतुर हो रहे थे। शर शैय्या पर पड़े पितामह भीष्म की पीड़ा और वेदना का ख्याल मात्र श्रीकृष्ण की वेदना को बढ़ा रहा था। वे ध्यान मग्न हो गए तभी युधिष्ठिर ने पूछा कि किस कारण आप इतने उद्वेलित हुए। श्रीकृष्ण ने स्पष्ट कहा कि वे इस समय पितामह भीष्म का स्मरण कर रहे हैं—उन्होंने युधिष्ठिर से कहा कि पितामह के जाने के बाद यह पृथ्वी श्रीहीन एवं शोभाहीन हो जायेगी- उनके न रहने पर भूमण्डल से ज्ञान का ह्रास हो जावेगा। इसलिए आप उनके पास जाकर चारों वर्णों और आश्रमों का, चारों विधाओं का, चारों पुरुषार्थों का और जो कुछ आपकी इच्छा हो उसका रहस्य जानेने का प्रयास करें। युधिष्ठिर के आग्रह पर स्वयं श्रीकृष्ण और अन्य पाण्डव पितामह के पास गए। क्षत विक्षित पितामह को श्रीकृष्ण ने अपने दिव्य शरीर का दर्शन दिया और वरदान दिया कि उनकी ग्लानि, मूर्छा भूख-प्यास, एवं सभी विकार समाप्त हो जावे। वे दिव्य दृष्टि प्राप्त करें एवं निर्मल बुद्धि और प्रकांड ज्ञान प्राप्त करें वे सत्वगुण प्राप्त करके इहलोक और परलोक का सारा ज्ञान प्रकट करने में समर्थ हो।

पितामह ने युधिष्ठिर से कहा—हर व्यक्ति को उत्तम व्यवहार करना चाहिए इससे धर्म प्रसन्न होता है। धर्म की प्रसन्नता से सुखशांति मिलती है। जीवन में पुरुषार्थ सबसे जरूरी है उसके बिना भाग्य कोई फल नहीं देता। व्यक्ति को सर्वदा सत्य का आश्रय लेना चाहिए। बिना सत्य के आश्रय से उसका कोई विश्वास नहीं करता। उसके अन्तरंग मित्र भी शंकित रहते हैं और शत्रु भी उसकी असत्यता का लाभ उठाते हैं। राज्य के लिए एवं प्रमुख पदों पर आसीन लोगों के लिए उन्होंने कहा कि उन्हें बहुत उग्र या बहुत सरल नहीं होना चाहिए। उग्रता से अपने भी भयभीत हो जाते हैं और इससे असली बात का पता नहीं चलता ज्यादा सरलता से अनुशासन नहीं रहता। राजा को चाहिए कि सदैव क्षमा न करें और न सदैव दण्ड दें। क्योंकि क्षमा करने से अपराधियों की बढ़ोतरी होती है और सर्वदा दण्ड देने से प्रजा अप्रसन्न हो जाती है। इतना ही नहीं व्यक्ति को किसी भी व्यसन में नहीं पड़ना चाहिए। ऐसी सीख व सलाह जीवन को सार्थक करती है।

'मिलनी सबकी चार रुपया, चाँदी छोड़ कागज का रुपया'

छगनलाल जैन : जैसा मैंने उन्हें जाना

डॉ. विमान कर

(स्व० जैन जी के प्रबुद्ध पड़ोसियों में शिक्षाविद् डॉ० विमान कर असम के विशिष्ट बुद्धिजीवियों में एक रहे हैं। प्राय: निकट पड़ोसियों पर व्यक्ति-जीवन की छाप उल्टी ही पड़ती है पर 'छगनलाल जैन : जैसा मैंने उन्हें जाना' डॉ० विमान कर का यह संस्मरण स्व० जैन जी की जिन्दगी के उन मार्मिक पहलुओं को उजागर करता है, जिन्हें समकालीन लोग प्राय: नजर-अन्दाज कर जाते हैं। गंभीर-शैली का यह संस्मरण पाठकों को स्व० जैन जी के संबंध में नई दृष्टि भी देता है।)

गुवाहाटी दूरदर्शन से 7 अक्टूबर 92 की शाम को जब छगनलाल जैन के स्वर्गवास का समाचार प्रसारित हुआ तो मुझे उतना आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि कुछ ही दिन पहले पक्षाघात का उन्हें दूसरा दौरा पड़ा था और तब से एक स्थानीय नर्सिंग-होम में उनका इलाज चल रहा था। पक्षाघात के प्रथम दौरे से पीड़ित होकर अस्पताल से इलाज करवाकर उनके घर वापस लौटने के बाद मैं उनसे मिलने गया था। उसके पहले अनेक सभाओं में हम आपस में मिलते-जुलते रहे व कई सभाओं कौ हमने एक साथ संबोधित भी किया था। हम दोनों का आपसी परिचय तीन दशकों से भी ज्यादा समय का रहा। मैं यह कहूं तो आंतरात्युक्ति नहीं होगी कि हम प्राय: हर रोज मिलते-जुलते थे। असमीया और हिन्दी में उनके द्वारा दिए गए विद्वतापूर्ण भाषण, चाहे वे महापुरुष **श्रीमंत शंकर देव** के बारे में हों या फिर नगरपालिका द्वारा नागरिक सुविधा मुहैया कराने के मामले में की जा रही अवहेलना के बारे में हर स्तर के श्रोता को मंत्रमुग्ध कर देते थे। पक्षाघात के प्रथम प्रहार ने उनसे उनकी वही मंत्रमुग्ध करने वाली वाणी छीन ली थी। उस दिन वे इसी हालत में कुर्सी पर बैठे थे। भाभी जी और उनका बड़ा लड़का प्रदीप उनके पास खड़े थे। मुझे देखकर उन्होंने खड़े होने का प्रयास किया। तत्काल आगे बढ़कर मैंने उन्हें अपनी बाँहों में ले लिया। मेरे कंधे पर सिर रखकर वे रोने लगे। बिना कहे ही मैंने उनके मन की बात भाँप ली। मैंने उन्हें हिम्मत बँधाते हुए कहा कि हम जल्द ही एक साथ फिर सभाओं में जाएंगे और बोलेंगे। उन्हें समझाया कि इस तरह भावुक होना उनके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है।

घर लौटते वक्त मैं प्राय: उस संकरे रास्ते से गुजरता था जिसके बिल्कुल दाँयी ओर छगनलाल जैन का घर है। दोपहर को उस ओर से गुजरते हुए मैं प्राय: देखता था वे अपनी पत्नी पूज्य भाभीजी के साथ आराम-कुर्सी पर बैठे हुए हैं। मुझे देखकर उनकी उज्ज्वल आँखों में एक चमक सी आ जाती थी। मुस्कुराते हुए प्रणाम कर मैं प्राय: बिना रुके आगे बढ़ जाता था। कभी-कभी भाभीजी से पूछ लेता था कि भाईसाहब कैसे हैं ? अब तो छगनलाल जी हमारे बीच नहीं रहे। ऐसे एक युग का समापन हो गया जिसका मूल्य-बोध आज के लगभग हर प्रौढ़ और युवा को अनुप्राणित करता रहेगा।

छगनलालजी मेरी दृष्टि में महज इसलिए महान नहीं थे कि आकाशवाणी के गुवाहाटी केन्द्र से उनके अनेक रेडियो-नाटक प्रसारित हुए थे। वे मेरे लिए इसलिए भी पूज्यनीय नहीं थे कि उन्होंने असमीया और हिन्दी दोनों भाषाओं में कई ग्रंथों की रचना की या फिर हिन्दी से असमीया और असमीया से हिन्दी में अनेक रचनाओं का रूपान्तर किया। वे मेरे लिए महान इसलिए थे कि वे एक अनुकरणीय आदर्श पुरुष थे। उनकी महत्ता का प्रमाण वे उदात मूल्य और आदर्श हैं जिनका उन्होंने सिर्फ प्रचार ही नहीं किया, बल्कि जिन्हें उन्होंने अपने जीवन में अक्षरश: उतारा। "**सादा जीवन उच्च विचार**" की इस महान भारतीय परम्परा के वे जीवित प्रतीक थे।

उस जमाने में अंग्रेजी साहित्य में एम. ए. की डिग्री के साथ-साथ वकालत की डिग्री भी हासिल करने वाले छगनलाल जैन अगर चाहते तो सहज ही में प्रोफेसर बन सकते ते, ऊँचे ओहदे वाले अफसर बन सकते थे या किसी बड़ी कम्पनी के संचालक बन सकते थे। 60 के दशक तक जबकि मैंने एक प्राध्यापक के रूप में कार्य प्रारंभ किया, अंग्रेजी प्राध्यापकों का इतना अभाव था कि अंग्रेजी में एम. ए. करने वाले प्राय: व्यक्तियों को सीधे प्रिन्सिपल के रूप में नियुक्ति मिल जाती थी। गैर-सरकारी कालेजों में भी अंग्रेजी प्राध्यापकों को दूसरे प्राध्यापकों की तुलना में काफी अधिक वेतन दिया जाता था ताकि वे कालेज छोड़ कर चले न जाएं।

एडवोकेट छगनलाल जैन उम्र में मुझसे 14-15 साल बड़े थे। पैतृक सम्पत्ति के रूप में उनके पास कुछ भी नहीं था। उनका जो कुछ भी था वह उन्होंने कठोर परिश्रम करके अर्जित किया था।

वे अपने आनुवंशिक व्यापार-वाणिज्य से इसलिए नहीं जुड़ पाए क्योंकि उनके जीवन का एक मिशन था जिसे उन्हें पूरा करना था। उन्हें अपने मारवाड़ी-समाज के अन्तमुर्खी रूढ़िवादी रूप को बदलने के लिए सुधारवादी आन्दोलन चलाना था। उनके अपने समाज में महिलाओं के लिए उच्च शिक्षा का द्वार खोलने के लिए जो जद्दोजहद हुई वे उस सामाजिक सुधार आन्दोलन के प्रमुख स्तम्भों में एक थे। उनके इस आन्दोलन के कारण मारवाड़ी समाज में महिलाओं के दर्जे और उनकी गरिमा में काफी बढ़ोतरी हुई है। असम में जहां महिलाओं को समाज में इस दिशा में प्रारंभ हुई यह प्रक्रिया आगे चलकर असमीया और मारवाड़ी समाज को एक दूसरे के निकट

बहु नहीं बेटी है, परायी नहीं अपनी है।

लाने और उन्हें एकता के सूत्र में पिरोने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी।

पर्दे के पीछे अपने-आपको छिपाए रखने की प्रथा पूरे महिला-वर्ग के लिए अपमान की बात होने पर भी मारवाड़ी समाज में वही चलता था। छगनलाल जी ने न सिर्फ इस मध्य युगीन प्रथा के विरुद्ध अपनी आवाज बुलंद की और अपनी लेखनी को सक्रिय किया, अपितु परिवर्तन का सूत्रपात अपने परिवार से किया। सांध्य-भ्रमण के लिए वे जब निकलते थे तो उनकी पत्नी हमेशा उनके साथ रहा करती थी। छगनलाल जैन अगर एक प्रोफेसर या प्रिन्सिपल होते तो सामाजिक सुधार के इस आन्दोलन के लिए सक्रिय हिस्सेदार और एक शक्तिशाली नेता वे कदापि नहीं बन पाते। उन्होंने अपने समाज के अंदर रहकर, उसका अंग बने रहकर अपना जीवन-निर्वाह किया तो शायद यह सोचकर कि ऐसे रहकर ही समाज में अभीसिप्त परिवर्तन लाने के क्षेत्र में प्रभावशाली भूमिका निभा सकेंगे।

संस्कृत में यह कहावत है "विनम्रता वास्तविक ज्ञान की पहचान होती है।" छगनलालजी का व्यवहार इतना विनम्र था कि बहुत कम लोग उनके अध्ययन की व्यापकता और उनकी समझ की गहराई का अंदाजा लगा पाते थे। हंसी-मजाक के बीच उनके साथ अनेक बार हुई अंतरंग बातचीत के माध्यम से मैंने इस महान व्यक्ति को थोड़ा-बहुत जाना-पहचाना था। उनके दोनों पुत्रों में अपने विख्यात पिता का यही गुण नजर आता है। उनका बड़ा बेटा जो अपने पिता के व्यवसाय की देख-रेख करता है और जिसने विश्वविद्यालय की हर परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया, वर्तमान गुवाहाटी विश्वविद्यालय के एम. बी. ए. विभाग में प्राध्यापक है। वह एक अंग्रेजी त्रैमासिक का प्रकाशक और संपादक भी है। कोई भी ग्राहक जब प्रेस में आता है तो उसकी मुलाकात एक विनयी प्रेस मालिक से होती है, विश्वविद्यालय के किसी विद्वान प्राध्यापक से नहीं। उनका दूसरा पुत्र पेशे से डाक्टर (सर्जन) है। उसमें भी अपने पिता की अनुकरणीय विनम्रता की झलक मिलती है। अपने दोनों ही पुत्रों में मानवीय मूल्यों के प्रति आकर्षण पैदा करने में छगनलाल जी कुछ हद तक सफल रहे थे। एक पिता के लिए यह भी कोई छोटी उपलब्धि नहीं थी।

वे जो कुछ भी कहते पूरे विश्वास और आस्था के साथ कहते। और यही कारण है कि उनके भाषण श्रोताओं पर गहरा प्रभाव छोड़ते थे। महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव के जन्मोत्सव पर आयोजित एक सभा में कही गई उनकी एक बात की सच्चाई एवं स्पष्टता ने तो मुझे स्तब्ध-सा कर दिया था। उनकी बात का सार यह था ; **'हम जब किसी महापुरुष के आदर्शों का सही मायने में अनुकरण करते हैं तब हम उसका ढिंढोरा नहीं पीटते, परंतु जब उनका अनुकरण हमारे लिए संभव नहीं होता या हमें जंचता नहीं, तब हम उनके बड़े-बड़े स्मारक बनाते हैं, सभा आदि का आयोजन करते हैं और इस सारी ताम-झाम का बढ़ा-चढ़ाकर प्रचार करते हैं।'** इस तरह की खरी बात वही व्यक्ति कह सकता है जिसकी समझ गहरी हो और अनुभव भी गहरा हो। यह घटना और यह बात छगनलाल जी की स्मृति को जीवन-भर मेरे हृदय व मस्तिष्क में जीवंत बनाये रखेगी। उनके चिंतन और कथन में, उनकी कथनी और करनी में जो समता थी उनके जीवन के हर क्षेत्र में उसकी साफ झलक मिल जाती है। नारी को वे समाज में बराबरी का दर्जा देने के प्रबल पक्षधर थे। उनकी पहली पत्नी का असमय ही देहांत हो गया था। उनका दूसरा विवाह एक ऐसी नारी से हुआ जो राजस्थान के पारम्परिक वातावरण में जन्मी, पली और बढ़ी थी। वही नारी छगनलाल जी का सान्निध्य पाकर एक मंजी हुई आधुनिक नारी में तब्दील हो गई थी, जिसकी तुलना किसी भी असमीया था बंगाली परिवार की पढ़ी-लिखी गृहिणी से की जा सकती है। अनेक विवाहित मारवाड़ी महिलाओं जैसी उसने घूंघट के पीछे चेहरा छिपाकर अपना जीवन नहीं बिताया। वह सही अर्थों में अपने स्वामी की जीवन-संगिनी रही। न सिर्फ सांध्य-भ्रमण के दौरान अपने पति के साथ टहलने जाती थी, बल्कि उनकी अनुपस्थिति में घर पर आए-गए लोगों की आवभगत भी करती रही है। साधारण-सी आधी बाँह की सफेद कमीज और धोती पहने वाले छगनलाल जैन की वास्तविक अर्थों में जीवन-संगिनी उनकी पत्नी भी हमेशा साधारण-से पहनावें में ही रहीं।

आदर्श विवाह के संबंध में छगनलाल जी की अपनी स्पष्ट धारणा थी जो स्त्री को दबे-कुचले स्तर से बराबरी के दर्जे तक ले जा सके। उनकी नजरों में पत्नी कोई व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं थी। अत: यह स्वाभाविक ही था कि वे दहेज जैसी कुरीति का विरोध बुलंद स्वर में करते। शायद इसीलिए स्त्री के लिये उच्च शिक्षा का द्वार खोलने के वे प्रबल पक्षधर रहे क्योंकि शिक्षा मनुष्य के नौकरी पाना या करना ही नहीं होता। इस बात के लिए वे जिन्दगीभर जूझते रहे और काफी हद तक सफल भी रहे। इसी का नतीजा है कि आज सैकड़ों की संख्या में मारवाड़ी लड़कियों को हम कालेजों एवं विश्वविद्यालयों में पढ़ते हुए देख रहे हैं। अपने कुछ अन्य प्रगतिशील मारवाड़ी युवा बंधुओं के साथ स्त्री को जीवन में ऊंची मर्यादा दिलाने का आन्दोलन उन्होंने चलाया, ताकि वे नारियाँ घूंघट के पीछे छिपे अपने व्यक्तित्व को बाहर प्रकट कर सकें, खुलकर सामाजिक जीवन में आगे आ सकें। घूंघट-प्रथा के विरोध में चलाया गया यह आन्दोलन पूरी तरह सफल रहा।

छगनलाल जी के जीवन का एक मिशन यह भी रहा कि असम के विभिन्न समाज, जाति और वर्ग के लोगों के बीच आंतरिक संपर्क को मजबूत बनाया जाय। उनकी असमीया और हिन्दी कहानियों और अन्य रचनाओं के मूल में जहाँ उनकी अन्त: चेतना और भावना रही है, वहीं प्रथम हिन्दी-असमीया अभिधान (1957) की रचना के मूल में भी एक विशेष उद्देश्य रहा है। **उनका विचार था, सामाजिक मेल-मिलाप और समन्वय में भाषा बाधक नहीं**

संगठन में ही शक्ति है, राष्ट्रीय एकता में हमारी भक्ति है।

होनी चाहिए। जहां कोई रहता है उस अंचल की भाषा उसे सीखनी चाहिए, और यदि संभव हो तो अपनी तरफ से उसे समृद्ध बनाने का प्रयत्न भी करना चाहिए। इस दृष्टि से उनके द्वारा रचित और अपनी प्रथम पत्नी की याद में समर्पित 'हिन्दी-असमीया अभिधान' एक महत्वपूर्ण देन मानी जाएगी । ऐसा कठिन कार्य करने का खतरा ये इसलिए मोल ले सके, क्योंकि इस बीच वे अपना प्रिंटिंग प्रेस आरंभ कर चुके थे। यह तो मैं नहीं जानता कि पंडित ईश्वरचंद्र विद्यासागर का उन पर कितना प्रभाव था किन्तु कुछ ऐसा ही काम विद्यासागर ने भी किया था। विद्यासागर को बंगला गद्य विकसित करना था और वह इसलिए कि सामाजिक सुधारों हेतु जनमत को उन्हें शिक्षित और सजग करना था। शिक्षारंभ करने वाले लोगों के लिए उन्हें किताबें प्रकाशित करनी थी। इतना सब कुछ वे हर्गिज न कर पाते यदि उनके पास अपना प्रिंटिंग प्रेस न होता। युवावस्था के प्रारंभिक दिनों में जब उन्होंने प्रिंटिंग प्रेस खोलने का निर्णय लिया होगा तो आजीविका की व्यवस्था करने के साथ-साथ इस तरह का निर्णय लिया होगा तो आजीविका की व्यवस्ता करने के साथ-साथ इस तरह का अतिरिक्त उद्देश्य भी उनके मानस में निश्चय ही रहा होगा। इस बात का प्रमाण हमें उनके द्वारा रचित पुस्तकों और उनके द्वारा सम्पादित और प्रकाशित हिन्दी-पत्र से मिलता है। असम साहित्य सभा की महत्वपूर्ण भूमिका को छगनलाल जैन ने महसूस किया और वे इसके आजीवन सदस्य बनें तथा अपनी सृजनात्मक प्रतिभा के बल असम साहित्य सभा में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया। असम साहित्य सभा की आजीवन सदस्यता लेना ही सभी से उनके गहरे लगाव को प्रकट करता है। हाल ही में उन्होंने करीब-करीब एक लाख रुपए दान कर असम साहित्य सभा द्वारा दी जाने वाली साहित्य पुरस्कार योजना को कार्यरूप दे दिया था। असम और असमीया लोगों के प्रति निश्छल प्रेम ने ही उन्हें असम-आन्दोलन का हार्दिक समर्थन करने के लिए प्रेरित किया था-ऐसा कहना गलत धारणा पैदा कर सकता है। क्योंकि छगनलाल जी न तो अवसरवादी थे और न ही उग्र क्षेतीयतावादी थे। असम आन्दोलन का पूरे अन्तःकरण से समर्थन उन्होंने एक सच्चे भारतीय के नाते ही किया था। अपने समाज में अपनी लोकप्रियता घटने की तनिक भी परवाह उन्होंने इस मामले में नहीं की। इस संदर्भ में मेरा अपना अनुभव भी कोई मधुर नहीं रहा है। पर समय ने हमारी बात सही साबित कर दी है। असम के छात्रों की मूलभूत मांगे आज राष्ट्रीय विचारणीय विषयों की सूची में महत्वपूर्ण स्थान पा चुकी हैं। यह आन्दोलन जहां एक ओर असमीया भाषा और संस्कृति की रक्षा के लिए चलाया गया आन्दोलन था, वहीं हमारे लिए यह राष्ट्रीय एकता और अखंडता की मजबूती के लिए चलाया गया आंदोलन था।

उनका गौरवपूर्ण कर्ममय जीवन, सामाजिक सुधार, स्त्री-मर्यादा का उत्थान, सामाजिक-समन्वय, आंचलिक और राष्ट्रीय स्तर पर एकता और अखंडता हेतु बिना किसी विरोधाभास के सतत प्रयत्नशील रहना हमें हमेशा प्रेरित करता रहेगा। 1

लघुकथा

'रायटर्स' का प्रारंभ

समाचार पत्रों के पाठकगण विश्व की सबसे बड़ी समाचार एजेंसी रायटर के नाम से भली भांति परिचित है लेकिन बहुत कम लोगों को पता है कि किन कठिन परिस्थितियों तथा कितने अल्प साधनों से इसका प्रारंभ हुआ था।

इस समाचार समिति के संस्थापक पाल जुलियस रायटर का जन्म 1816 में जरमनी के एक यहूदी परिवार में हुआ था।

रायटर ने समाचार एकत्र करने का कार्य जरमनी के ऐक्स नगर में प्रारंभ किया। वे कबूतरों द्वारा बेल्जियम के ब्रूसेल्स नगर से शेयरों के उतार चढ़ाव के समाचार मंगवाते थे और अन्य लोगों से तीन घंटा पूर्व व्यापारियों को दे देते थे। इससे उन्हें जो धनराशि प्राप्त होती, उसके कारण उनका उत्साह बढ़ता गया।

1851 में अपना कारोबार बेच कर वे लंदन में जा बसे। उन्होंने स्टाक एक्सचेंज भवन में एक दफ्तर ले लिया, ताकि स्टाक एक्सचेंज की खबरें यूरोप के व्यापारियों को भेज सकें। उन्होंने जान ग्रिफिथ नाम के एक बालक को चपरासी रख लिया।

दोनों बहुधा दफ्तर में खाली बैठे रहते थे। एक दिन वे एक सस्ते भोजनालय में खाना खा रहे थे कि ग्रिफिथ दौड़ा हुआ आया और हांफते हुए बोला, "सर, एक सज्जन आपसे मिलने आए हैं।" रायटर ने अधीर हो कर पूछा, "बहुत अच्छा! भला वे कौन है?" "विदेशी मालूम पड़ते हैं।" ग्रिफिथ ने बताया, रायटर हर्षित हो कर बोल उठे, "विदेशी? ईश्वर का धन्यवाद कि कारोबार की बात शुरू हुई।" दूसरे ही क्षण कुछ आशंकित होकर उन्होंने फिर पूछा, "वे चले तो नहीं गए? क्या अपना पता छोड़ गए हैं? तुमने देर तो नहीं कर दी?"

"सर, आप निश्चिंत रहें। वे दफ्तर में बैठे हैं। मैं बाहर से ताला बंद करके आया हूँ।"

इस प्रकार रायटर्स समाचार एजेंसी का नया कारोबार शुरू हुआ, जिस के प्रतिनिधि आज विश्व के कोने कोने में हैं।

गुरु दक्षिणा

समर्थ गुरु रामदास का यश चारों तरफ फैला था। मराठा दरबार में उनकी पूजा होती थी। स्वयं छत्रपति शिवाजी समर्थ गुरु को बहुत मानते थे। एक दिन गुरु शिष्य मंडली के साथ सतारा पहुँचे। ख़बर मिलते ही शिवाजी अगवानी के लिए नंगे पांव दौड़े आए। उन्होंने श्रद्धा से गुरु को प्रणाम किया और भीतर चलने का आग्रह किया। गुरु ने कहा कि वे भिक्षा के लिए आए हैं और रुकेंगे नहीं।

"अच्छा, आप जरा रुकिए। मैं भिक्षा का प्रबंध करता हूँ।" यह कह कर शिवाजी अंदर चले गए।

थोड़ी देर बाद शिवाजी लौटे तो उनके हाथ में कागज़ का एक पुरज़ा था। उन्होंने वह पुरज़ा भिक्षा पात्र में डाल दिया। गुरु रामदास तथा उनके शिष्य चौंक पड़े। उन्होंने पुरज़ा पढ़ा तो लिखा था, "मैं संपूर्ण राज्य अपने गुरु रामदास को सौंपता हूँ।"

उसे पढ़ कर, गुरु बोले, "शिवा, तू ने यह क्या किया?"

शिवाजी ने कुछ उत्तर नहीं दिया। उन्होंने गुरु जी का भिक्षा पात्र लिया और स्वयं घर घर जा कर भिक्षा मांगी। जो कुछ मिला, उसी का भोजन बना कर गुरु तथा उनके शिष्यों को खिलाया।

शिवाजी की गुरु भक्ति देख कर समर्थ रामदास गद्‌गद् हो गए। उन्होंने शिवाजी के सिर पर हाथ रख कर कहा, "शिवा, तू धन्य है। मैं तो साधु हूँ। तू अपना राज्य संभाल। जनता की सेवा कर। प्रभु तेरी कामना पूरी करेंगे।" इतना कह कर गुरु अपनी शिष्य मंडली सहित चल पड़े। 1

घरेलू

"धारा 498 A"

शम्भु चौधरी, कोलकाता

पिछले दिनों समाचार पत्र "द टेलीग्राफ" के METRO अंक 17 जुलाई 2006 को देखकर कोई भी सजग व्यक्ति चौंक सकता है। बंगाल की "महिला सुरक्षा शाखा" का मानना है कि कुछ माह में इनके पास औरतों की अपेक्षा पुरुष वर्ग की ज्यादा शिकायतें दर्ज हुई है। CID (Criminal Investigation Department) की 'महिला सुरक्षा शाखा' में हो रहे इस परिवर्तन पर बंगाल के Deputy Superindent of Police " Neelu Sherpa मानती है कि चूँकि यह CELL महिलाओं की सुरक्षा हेतु बनाया गया है, इसलिए वे ऐसी शिकायतों पर कोई कदम नहीं उठा पाती। फिर भी कुछ मामलों में "सेवा" के माध्यम से ऐसे मामलों को सुलझाने का प्रयास करती है। 200 से अधिक ऐसी शिकायतें सरकार के पास जमा हुई है, जिसमें महिलाओं द्वारा अपने पति को प्रताड़ित करना, मानसिक व शारीरिक रूप से उसे क्षति पहुँचाना, पीटना व अपमानित करना जैसे मामले शामिल है ऐसे मामलों में ज्यादातर शिक्षित महिला ही पाई गयी है। उससे भी ज्यादा चौंकाने वाले तथ्य ये हैं कि महिलाओं द्वारा दायर अधिकतर मामले को सरकार का यह विभाग मानता है, कि झूठे, व बेमतलब अपने पति को Blackmail करने के लिए किए जाते हैं।

"Accordint to Sherpa, 60 to 70 Percent of the torture compaint by wives prove to be baseless. We have found that in several cases, Women Lodge complaints only to harass their husbands."

कुछ सरकारी पदों पर कार्य कर रहे अधिकारियों का यह भी मानना है कि वे ऐसा अनुभव करते हैं, कि कई, बल्की अधिकतर मामलों में महिलाएँ धारा 498 A का अपयोग अपने पति को सताने के लिए करती पायी गयी है।

"Most of the Complaints are aware of the law and its implications. "They Misuse the law only to teach their husbands a Lesson." Mr. P. Ravi (Deputy inspector-general CID (Special), (Bengal Govt.)

इस बात को समाजिक संस्थाएँ, और पत्रकारिता के क्षेत्र में कार्य करने वाले कई लोग भी मानने लगे हैं, कि धारा 498 ए में सुधार की आवश्यकता है। पिछले दो-तीन वर्ष पूर्व कलकत्ते के एक समाचार पत्र ने इस विषय पर परिचर्चा भी करवाई थी। इस परिचर्चा का निचौड़ भी इस बात को बल देता रहा कि धारा 498ए के अधिकतर मामले झूठे हैं। प. बंगाल सरकार की तरफ से बंगाल के समस्त थानाओं को हिदायतें दी गयी, कि वे ऐसे मामलों को दर्ज करने में जल्दबाजी न करें, थाने में कुछ समाजिक दायित्व का भी निर्वाह करें। बंगाल के कई थानों में इन दिनों मुझे देखने को मिला है कि वे मामले को समाजिक रूप से लेकर वैगेर मामला दर्ज किए, डरा-धमका/समझा-बुझा के मामले को सुलझाने का प्रयास करते पाये गए हैं। हमें यह मानल लेना चाहिए कि धारा 498ए के गलत इस्तेमाल को हम बल प्रदान न करें। जिस प्रकार गलत हाथों में रिवाल्वर जाने पर, किसी की भी जान जा सकती है, उसी प्रकार धारा 498ए भी निर्दोष व्यक्ति को सजा देने में सक्षम है। पिछले एक लेख में मैंने लिखा था, **कि समाजिक संस्थाओं का यह कार्य कदापि नहीं हो सकता है कि निर्दोष व्यक्ति को सजा दिला दी जाए" यदि दोषी को सजा दिलाना हमारा कार्य है, तो निर्दोषी को बचाना भी समाजिक कार्य होना चाहिए।**

हम कई बार धारा 498ए के मामले में महिलाओं का पक्ष लेते पाये गए हैं। मैं खुद भी इस कठघरे में खड़ा हूँ। और यह स्वीकार करता हूँ कि धारा 498ए के अन्तर्गत दायर 70% मामलों को बैगर 498ए के सुलझाया जा सकता है, इसके लिए दो विन्दुओं पर हमें केन्द्रित होना होगा।

(1) जहाँ तलाक की बात है, वहाँ धारा 498ए का प्रयोग बन्द करने के विषय पर सोचना होगा।

(2) पति के अन्य गलत आचरण को धारा 498ए के अन्तर्गत क्रमबध कर मामले को विषयानुरूप लेना होगा। जैसे-

(i) पति शराब पीकर पत्नी/बच्चों को मारता-पीटता है।

(ii) पति गैर औरत से रिस्ता रखता है, और पत्नी को मारता चिल्लाता, दोष ढूंढ़ता है।

(iii) पति कम कमाता है एवं खर्च अधिक होने पर हताश हो कर मारपीट करता है।

(iv) स्वभाव से मार पीट करता है।

(v) असमाजिक तरीके से पत्नी के साथ वर्ताव करता है।

आदि इस तरह से इन पहलुओं पर पुन: प्रकाश डालना होगा। हर व्यक्ति किसी न किसी रूप से इस तरह के मामलों में धिरा हुआ है, हम सबको मिलकर ऐसा प्रयास करना चाहिए, कि महिलों को जहां इस धारा के अन्तर्गत सुरक्षित भी रखा जा सके व साथ ही साथ इसके गलत प्रयोग पर अंकुश भी लगाया जा सके।

धारा 498 ए जिन दिनों संसद में लाया गया था, उस समय की सांसद श्रीमति सरला माहेश्वरी जी से भी कई बार नि पहलुओं पर चर्चा हुई, जो एक दिन खुले रूप में संसद में इस बील को पारित कराने में हिस्सा ले चुकी है, वे भी मानती है, कि आज इस बिल में सुधार की आवश्यकता है, जिस दिन यह कानून बना, उस दिन की सोच एवं इस कानून के गलत प्रयोग के बढ़ते मामले को देखते हुए इसमें कई सुझाव/व सुधार की आवश्यकता है। सरकार को इस पर पुन: विचार करने हेतु जल्द ही उच्चस्तरीय/कानूनी सुझाव मंगाने चाहिए। इस कानून को Crpc Act से हटाके Civil Act के अंतर्गत हस्तांतरित क्यों न कर दिया जाए इस पर भी विचार किया जाना चाहिए। यह समस्या Crime नहीं समाजिक है, जिसमें कहीं न कहीं आपकी लड़की/मेरा लड़का, या फिर मेरी लड़की/आपका लड़का दोषी है, व भी क्यों? चूँकि वे एक पति-पत्नी है" **क्या हम इस प्रयास को बल नहीं दे सकते कि हमारे बच्चे कानून के प्रयोग से टूटने के बजाय जुड़ जाए।** ⊥

योग्य नेतृत्व तैयार करें

गौरीशंकर कायां

कोलकाता महानगरी का मारवाड़ी समाज के उत्थान में बहुत बड़ा योगदान रहा है। राजस्थान, हरियाणा से निकलकर जीविका के संधान में जब मारवाड़ी निकले थे तो कोलकाता ने उन्हें जीविकोपार्जन का संसाधन उपलब्ध कराया था। आज से महज 50-60 साल पहले तक दिशावर को निकले राजस्थानियों का पहला पड़ाव कोलकाता होता था।

मारवाड़ी समाज के जिन विभूतियों ने व्यापार वाणिज्य में उंचाइयों को छुआ उनका संपर्क किसी न किसी रूप में कोलकाता से रहा। चाहे बिड़ला परिवार हो या गोयनका परिवार, डालमियां हो या पोद्दार। विश्व के समृद्धतम लोगों की सूची में तीसरे नंबर पर आने वाले लक्ष्मी नारायण मित्तल का जन्म भी कोलकाता में ही हुआ।

अंग्रेजी शासन के दौरान कोलकाता चूंकि व्यापार-वाणिज्य का प्रमुख केन्द्र था इसलिए यहां आने की प्रवणता अधिक थी। पूर्वी और पूर्वोत्तर क्षेत्र का सबसे बड़ा बाजार भी कोलकाता ही था।

स्थिति बदलती है। कोलकाता में मारवाड़ियों का आना कम हुआ है। मुंबई, दिल्ली, गुजरात, बंगलौर, हैदराबाद आदि व्यवसाय के नये ठिकाने हो गये हैं। भूमंडलीकरण व सूचना क्रांति, तकनीकी विकास ने विदेशों में जाकर व्यवसाय के रास्ते भी खोले हैं फिर भी कोलकाता का अपना महत्व अब तक कायम है।

व्यापार-वाणिज्य में समृद्धि देने के साथ-साथ कोलकाता ने मारवाड़ियों में सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना के विकास में भी योगदान दिया। उन्नीसवीं सदी के उत्तराई में बंगाल में हुए नवजागरण का सर्वाधिक प्रभाव बंगाली समाज के बाद मारवाड़ी समाज पर पड़ा। यह प्रभाव इतना प्रबल था कि मारवाड़ी समाज के कतिपय चिंतक सदियों की रूढ़ियों, कुरीतियों, अंधविश्वासों से समाज को मुक्त करने हेतु कमर कस कर निकल पड़े। चिन्तन की नयी धारा का उत्स कोलकाता में था लेकिन उसका असर पूरे भारत में दिखाई पड़ता था।

इसी कोलकाता में समाज सुधार-आन्दोलनों की शुरूआत हुई जिसने बहुत सी प्राचीन प्रथाओं को खत्म कर आधुनिक व्यवस्था की नींव डाली। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना और इसके प्रारंभिक कार्यों को देखें तो उस बात की सत्यता का पता चल जाएगा। पर्दा प्रथा, बाल विवाह, धन के अपव्यय रोकने, शिक्षा विशेषकर बालिकाओं की शिक्षा को आवश्यक करने एवं व्यवसायिकता के साथ सामाजिकता व मानवीयता को सम्मानजनक रूप से प्रतिष्ठित करने में सम्मेलन की महती भूमिका रही हैं।

अपने जीवन के अनुभवों से बता सकता हूँ कि कोलकाता में सामाजिकता और मानवीयता का कितना अहम स्थान था। अपने प्रारंभिक दिनों में सामाजिक क्षेत्र के लोगों के बारे में जानने, समझने और उनका सान्निध्य पाने की उत्कंठा हमेशा बनी रहती थी। देखता था किस तरह व्यापक समाज के हित के लिए वे रात-दिन अथक परिश्रम करते थे और वह भी निःस्वार्थ भाव से, आज कोलकाता में मारवाड़ी समाज के गौरवचिन्ह **मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, विशुद्धानन्द अस्पताल, विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय की महिमा** भले घट रही हो पर एक समय इनकी स्थापना और संचालन में भागीदारी पाने के लिए लोग लालायित रहते थे।

व्यवसायिक उन्नति के साथ समाज और सामाजिकता में बढ़ोत्तरी की आशा थी और इसीलिए मैं स्वयं सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय भी हुआ था पर आज जब परिस्थितियों का आकलन करता हूँ तो पाता हूं कि कहीं कोई ऐसी विसंगति जरूर है जिसने बड़ा उलटफेर कर दिया है। आर्थिक स्थिति चाहे जितनी मजबूत हो रही हो पर समाज और सामाजिकता के विषय में सोचने की मानसिकता निरंतर घट रही है।

ऐसा नहीं है कि सामाजिक संस्थाओं की कमी है या सामाजिक लोगों का अभाव है बल्कि सच्चाई तो यह है कि सामाजिक संस्थाओं की बाढ़ सी आई हुई है और इसी अनुपात में सामाजिक लोगों की संख्या भी बढ़ रही है पर ये सब संदेह के घेरे में हैं। आम आदमी इन संस्थाओं और सामाजिक लोगों पर विश्वास नहीं कर रहे हैं।

अविश्वास की यह भावना इतनी प्रबल है कि सच्चे समाजसेवी भी अपने को असहाय पा रहे हैं।

मेरी नजर में सेवा जैसी पवित्र भावना के लिए व्यवसायिकता का आरोप शर्मनाक है, वह भी एक ऐसे समाज के लिए जिसका सेवा के क्षेत्र में ऐतिहासिक योगदान रहा हो लेकिन वास्तविकता को देखते हुए कुछ कह पाने की स्थिति में नहीं हूँ।

भारत का कोई ऐसा कोना नहीं है जहां मारवाड़ी नहीं है और इसी कड़ी में यह भी ध्रुव सत्य है कि मारवाड़ियों ने हर कोने में सेवाभावना का ठोस सबूत पेश किया है। धर्मनगरियों में स्थापित मंदिरों, धर्मशालाओं की तादाद हो या महानगरियों में विद्यालयों, अस्पतालों की तादाद मारवाड़ियों के नाम हर जगह स्वर्णाक्षरों में अंकित हैं। फिर अपनी कीर्ति को धूमिल करने का प्रयास क्यों? यही सवाल मेरे लिए अबूझ पहेली की तरह है।

सामाजिक समारोहों, धार्मिक समारोहों में जाना मेरी आदत है, बाध्यता भी और एक तरह से सामाजिकता का तकाजा भी पर वहां जिस प्रकार से धन के अपव्यय का नजारा देखता हूँ सच कहूं तो अपनी उपस्थिति पर ही शर्मसार हो उठता हूँ।

एक समय घर में लड़के-लड़कियों की शादी में सामाजिक संस्थाओं को दान देने की प्रथा थी और यह सामाजिक कार्यों के लिए इंधन की तरह होता था पर अब नियंत्रण पत्र से लेकर स्वागत समारोह तक खर्चे का जो रूप देखता हूँ तो आंखे चौंधियां जाती हैं।

जीवन में बहुत सी संस्थाओं से जुड़ने, काम करने एवं लोगों से मिलकर उनकी भावनाओं को समझने का मौका मिला है जिनमें **मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, विकास, बनबन्धु परिषद** आदि हैं। अभी भी **मारवाड़ी बालिका विद्यालय** से जुड़ा हुआ हूँ पर कभी सेवा से व्यवसाय की भावना मन में नहीं आई।

मारवाड़ी समाज की युवा पीढ़ी उर्जावान, प्रतिभावान एवं नए जमाने के अनुरूप नई सोच का वाहक हैं। वह परंपरागत अवधाराणाओं से हटकर नए क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है। उसमें समाज के लिए नया कुछ करने की उत्कंठा है। जरूरत है युवा पीढ़ी की उर्जा, प्रतिभा और सोच को समाज के व्यापक हित में प्रयोग करने की और यह काम योग्य नेतृत्व ही कर सकता है। हम योग्य नेतृत्व तैयार करे समाज अपने आप बदल जायेगा।

समीक्षा

'पड़बिंब' : एक सार्थक कृति

राजकुमार गनेड़ीवाला, चित्रकार

श्री केसरी कान्त शर्मा 'केसरी' की नवीन कृति ''पड़बिंब'' को जब पढ़ना प्रारम्भ किया तो मन उद्वेलित हो उठा। इस प्रेरक कृति में कवि ने देश और समाज में फैली अव्यवस्थाओं, अन्याय और मानव की पैशाचिक वृत्तियों पर प्रहार करते हुए एक सम्पूर्ण सत्य को तो उजागर किया ही है, साथ ही दलित, दमित, शोषित जनों में चेतना पैदा करने का प्रयास भी किया है। इस प्रकार सार्थक सृजन की कसौटी पर कवि शत-प्रतिशत खरा उतरा है। समाज में जब विकृतियाँ अपने चरम पर हों तो सच्चे सर्जक का यह धर्म है कि वह अपनी कलम उठाये, आसुरी वृत्तियों को ललकारे और जनशक्ति को जागृत करे। केसरी ने ऐसा ही किया है। इस कृति की एक पंक्ति ''**काढ़ काँकरो कलमड़ी**'' अन्याय के खिलाफ कवि की बैचेनी और बगावत का सबूत है। देश और समाज में फैली नाना प्रकार की विकृतियों के बीच पिसता आम आदमी और सत्ता लोलुपों द्वारा उसके साथ किए जाने वाले छल और डोंग को बेनकाब करने में कवि ने किंचित भी कमी नहीं छोड़ी। इस कृति में कवि ने आम आदमी की भाषा राजस्थानी बोली (मायड़ भाषा) तथा सबसे सरल छंद ''दूहा'' को अपने भावों के माध्यम से बनाया है ताकि जो कुछ कवि के मन में है वह ज्यों का त्यों पाठक महसूस कर सके। केसरी के दूहों में जो कुछ लिखा है, वह पाठक के हृदय को झकझोर कर रख देता है। पड़बिम्ब को पढ़कर ऐसा लगा जैसे भावों का धधकता ज्वालामुखी एकाएक फूट पड़ा है और उसका लावा अन्यायी और अत्याचारियों को निगलने-लीलने को तैयार है। यह कृति पढ़ने के बाद मैंने महसूस किया कि राजस्थानी भाषा में शब्दों का अनन्त और अनमोल भंडार छिपा है और कविता के सृजन के लिए किसी भी ऐसे शब्द और उपमा का अभाव नहीं जिसके कारण भावों की प्रस्तुति में बाधा आये। अन्याय और अत्याचार को उजागर करने में प्रयुक्त कवि की शब्दावली—''**रगत चूंसी डांस, ज्हैर उगलसी सरपड़े, तिलक लगावै कागला, गुड़ बाँटै है गावड़ा, अण छाण्यो लोही पिवै, टाबर बेचै मावड़ी, नारी की अस्मत लुटै, बलै उघाड़ो डील**'' आदि पढ़कर तन-मन में सनसनी-सी फैल जाती है। दूषित राजनीति तथा सत्ता-लोलुपों पर प्रहार करते हुए कवि ने, **सत्ता लोभी धींगड़ा, लोप करैगी राज** जैसी तीव्र चोटें कर अपनी सशक्त शब्द सामर्थ्य का परिचय दिया है। शोषकों की शर्मनाक एवं भयावह करतूतों का चित्रण उनके एक छोटे से दोहे में देखिए-

फाँ-फूँ करता भेड़िया, ऊभा रोटी घेर।
बोटी मोटी काटसी, रोटी छोटी देर॥

श्री केसरी की कृति पड़बिम्ब से पुनः एक बार साबित हो गया है कि राजस्थानी भाषा भावों की अभिव्यक्ति के लिए एक सशक्त और समृद्ध भाषा है तथा श्री केसरी राजस्थान भाषा के सच्चे सिपाही है, केसरीजी शब्दों के जादूगर हैं और उनकी अनूठी शब्द रचना ही इस कृति की शक्ति है। कृति का शीर्षक पड़बिम्ब अत्यन्त सार्थक है और यह उस ''सम्पूर्ण'' का पड़बिम्ब है जिसमें हम सब जी रहे हैं। पुस्तक प्राप्ति स्थल :-

पड़बिंब/केसरीकान्त शर्मा 'केसरी'
प्रतिज्ञ प्रकाशन, मण्डावा-333704
प्रथम संस्करण-जनवरी-2006
मूल्य : 100 रु०

मारवाड़ी युवा मंच की डायरेक्टरी प्रकाशित

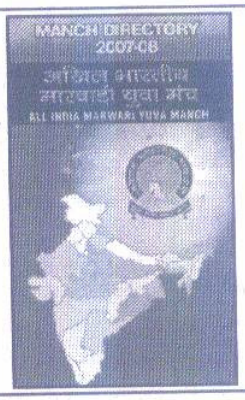

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच का वर्ष 2007-08 की नयी डायरेक्टरी प्रकाशित हो गयी है। इस डायरेक्टरी में युवा मंच की देश भर में कार्यरत 125 एम्बुलेंस सेवा व कई शववाहिनी सेवा संचालित शाखाओं के नाम व पते दिये गये हैं। मंच की देश भर में सक्रिय 521 शाखाओं की सूची इस डायरेक्टरी में अध्यक्ष व सचिव के नाम, पते के साथ दर्ज है। युवा मंच का सिलीगुड़ी में **नेशनल मारवाड़ी फाउन्डेशन** के अन्तर्गत एक विशाल ''**कृत्रिम पैर प्रत्यारोपण**'' केन्द्र भी स्थापित है, जहां से मोबाइल वैन के द्वारा देशभर में मंच की शाखाओं के मार्फत कैम्प लगाये जाते हैं। मंच के वर्तमान में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अनिल कुमार जाजोदिया हैं। इस डायरेक्टरी का सम्पादन श्री रवि कुमार अग्रवाल ने किया है।

भारतीय स्वातंत्र्य-यज्ञ के एक दक्ष सैनिक

शुभकरण चुड़ीवाल

बंकिम चन्द्र बनर्जी

स्वाधीनता उपलब्धि के 60 वर्ष बीतने की राह जब हम 60 वर्ष के पूर्व के स्वाधीनता जंग के चार दशकों के पूर्व के घटना प्रवाह की ओर दृष्टि प्रसारित करते हैं तो उन दिनों के घटना चक्रों के दृश्यों के परिप्रेक्ष्य में देशात्म बोध की जो सुगंध अभी भी आती है, उसके अनिवर्चनीय शौर्य के सामने सिर झुक जाता है स्वतः। और तब आत्म विश्लेषण की भावना जाग उठती है। उसी के साथ गहरा धक्का भी लगता है कि हमाार देशात्म बोध बड़े क्रूर तरीके से हमसे छीना गया है। देशात्म बोध की जगह एक ऐसा दैत्य बोध हमारे सीने पर आ बैठा है कि हमें यह कहने में लज्या नहीं होती है, हम संत्रासवादियों का संसार सजा रहे हैं जहां सहसर सहस्र रावण, अहिरावण के घिनौने करिश्मे से भी भयंकर करिश्मे सिने-रिल की तरह चल रहे हैं। वर्तमान संदर्भ की चर्चा इसलिए अपेक्षित प्रतीत हुआ कि उन्नीस सौ उन्नीस से लेकर उन्नीस सौ सैंतालिस का संघर्षपूर्ण इतिहास में वर्तानिया सल्तनत के अमानवीय पीड़न-उत्पीड़ने एवं हम में से कतिपय विभीषण के बावजूद स्वाधीनता सेनानियों के राष्ट्रबोध ने कभी अपने को गिरवी नहीं रखी। सर्वदा उन सबों का सिर उन्नत रहा। ढेर सारी विपदाओं की आंधी सभी प्रकार के कृत्रिम उपायों से वर्तानिया सल्तनत के द्वारा बहायी जाती रही, किन्तु स्वाधीनता सेनानियों का चट्टानी मनोबल हिमालय के उत्तुंग शिखर से सिंहगर्जन करता रहा। राष्ट्र-संकल्प के साथ चित्त की दृढ़ता और राष्ट्र के लिये आत्मोत्सर्ग की भावना का पराजय किसी भी संग का इतिहास लिपिबद्ध नहीं किया है। शुभकरण चूड़ीवाला उन्हीं स्वाधीनता सेनानियों में से प्रथम श्रेणी के थे।

राजस्थान के बाहर राजस्थानी वणिक समुदायों में कोलकाता के बाद दूसरा स्थान भागलपुर का रहता आया है। तीसरा स्थान गुवाहाटी और अब चौथा स्थान बंगलूर का चिह्नित हो रहा है। ऐसे तो व्यवसायिक प्रवृत्ति की उद्दाम लालसा में राजस्थानी वणिक दल सारे भारत में कई शताब्दी पूर्व से ही आते जाते रहे हैं किन्तु पूर्वी भारत उनके लिये विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा है। क्रम टूटा नहीं कभी। पूर्व में राजनीतिक वणिक दल कोलकाता, भागलपुर व गुवाहाटी जहां भी आये, स्थान की मिट्टी को चूमा, प्यार किया और अपने अपने लाभांश के कुछ प्रतिशत स्थानीय जन कल्याण कार्यों के लिए सुरक्षित रखते रहे। सच जानिये, पेड़-पौधे, गुल्म-लताएं जहां भी रहती हैं, जहां की माटी से जीवन-रस लेती हैं, उस स्थान के प्रति फूल, फल देकर कृतज्ञता प्रकट करती हैं। प्रकृतिकी इस नियम का आदर जहां भी जिस जाति समुदाय ने किया है, उस स्थान का उन्नयन हुआ है। जन कल्याणक कार्यों का विस्तार हुआ है। आजादी के पूर्व के दिनों में भागलपुर में वैसा नजीर रहा है। राजस्थानी वणिक दल जन-स्वास्थ्य के कार्य यथा निःशुल्क चिकित्सालय की स्थापना, निरक्षरता और मूढ़ता के अंधकार से मुक्ति पाने के पथ-संधान के लिये शिक्षा संस्थानों की स्थापना, विविध कार्यों से भागलपुर आनेवालों के ठहराव के लिए धर्मशालाओं की स्थापना, गरमी के दिनों प्यासे राहगीर के लिए जलदान की व्यवस्था आदि गवाह हैं। वैसे सामाजिक जन कल्याणक कार्यों के अलावा भी स्वाधीनता संघर्ष में भी राजस्थानी वणिक दल ने भी स्थानीय संघर्षशील युवाओं ने भी कंधा से कंधा मिलाकर हर जोखिम में साथ दिया है, मुसीवतें झेली है। चाहे वह असहयोग कार्यक्रम रहा हो, विदेशी वस्त्रों का वहिष्कार, खिलाफत आन्दोलन में सक्रिय योगदान रहा हो, नमक कानून तोड़ने का रहा हो, उन्नीस सौ इकतालिस का व्यक्तिगत सत्याग्रह द्वितीय विश्वयुद्ध में जबरिया भारतीयों को घसीटे जाने के प्रतिवाद का रहा हो, उन्नीस सौ बयालिस की महाक्रान्ति यज्ञ-अनुष्ठान का रहा हो, राजस्थानी वणिक दल ने कभी पीठ नहीं दिखाई है। शुभकरण चूड़ीवाला वणिकदल के परिवार का ही प्रगतिशील युवा रहे जिन्होंने अपनी जवानी स्वाधीनता -संघर्षके यज्ञ को समर्पित कर दी थी एवं ब्रिटिश पैशाचिक काटा की यंत्रणाओं को अन्यान्य सेनानियों की तरह झेला था।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद शुभकरण चूड़ीवाला ने सक्रिय राजनीति से ध्यान हटा कर सार्वजनिक सामाजिक संस्कार के कामों में उसी तरह धुनी लगा दिये जिस तरह अपना संकल्पित जीवन लेकर आजादी के जंग में अपने को झोंक दिया था। पेशागत व्यवसायिक परिवार में, जिस परिवार में जीनको एक मात्र साधन व्यवसायी वृत्ति है, उस वृत्ति की ओर नहीं जाने का अर्थ होता है, परिवार को असीम कष्ट में डालना। किन्तु शुभकरण चूड़ीवाला ने यही समझा कि कष्ट साध्य प्राप्त आजादी की सुरक्षा तभी हो सकती है, जब समाज का वह पुरातन संस्कार बदल नहीं दिया जाता है, जिस संस्कार में समता समानता के लिए कोई ठोस पृष्ठभूमि डंगरे के बैंगन की तरह है। और वह भी पुरुष शासित व्यवस्था में, जिस व्यवस्था का सूत्र अपने स्वार्थहित हिन्दु कर्मकाण्ड व्यवस्था

तथाकथित ब्राह्मणवाद के तहत के पुरोहितवर्ग के हाथ है। जिसका जनाधार मात्र धर्मान्ध तौर तरीके से जुड़ा हुआ है। ब्राह्मणवादी एवं पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था में धर्म, मत, पथ की टकराहट बनी रहनी है तथा भाई-बाई तक के भेदभाव की खाही पाटी नहीं जा सकती है। सम्प्रीति और सद्भाव के सूत्र में जबतक समाज बंध जाता नहीं है तब तक वैमनस्य की आग प्रशमित हो नहीं सकती है।

स्वाधीनता संघर्ष के दिनों में शुभकरण चूड़ीवाला को कार्य के क्षेत्र में अनुभव हुआ था कि राष्ट्र की एकता अखंडता बाधित करने के असत प्रयास हिन्दु मौलवी याने चन्दन-टीकाधारी ब्राह्मण कहलाने वाले और मुसलिम मौलवी द्वारा तथाकथित धर्म के नाम हो रहा है। हुआ भी वही। भारत तीन खंडों में बंटा। धर्म का शिकार हुआ। हिन्दु मुसलिम के बीच भाईचारे का कोमल मधुर सम्पर्क जो शताब्दियों से अभिन्न चला आ रहा था, उन सम्पर्क को कागज या अन्य दूसरी वस्तु की तरह हिन्दु और मुसलिम के मौलवी चूहिया बनकर कुतर रहे हैं। साम्प्रदायिक दंगे के बल देश जो बंटा एवं पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दो पृथक सार्वभौम राष्ट्र बन जाने के बाद जहां भाईचारे और सद्भावना का माहौल लौटना चाहिए था, नहीं लौटा। साम्प्रदायिक दंगे होते रहे, होते रहे हैं, थमे नहीं है। मुसलिम समुदाय यद्यपि अल्पसंख्यक चिन्हित हैं, किन्तु उनकी संख्या इतना कम नहीं है कि उन्हें विताड़ित किया जा सके। भारत की मिट्टी में जैसे ह्विन्दु समुदाय की जड़े हैं, मुसलिम समुदाय के भी है। स्वामी विवेकानन्द ने भविष्य दर्शी ऋषि की तरह इसलिये कहा था—भारत की एकता चाहते हो, भारत की सर्वविध उन्नति और विकास चाहते हो तो उसके लिये आवश्यक है, हिन्दुओं के वैदिक मस्तिष्क का और मुसलमानों के श्रम का। शुभकरण चूड़ीवाला ने स्वामी विवेकानन्द की नीति को सामाजिक संस्कार में ढालने के कामों को ही जीवन में प्राथमिकता दी। और आजीवन देते रहे।

स्वभाव में विनयी, मिष्टभाषी एवं सहज में जिस किसी को भी अपनी ओर आकर्षित कर लेने के वे जादूगर रहे। निराश और हताश व्यक्ति को जो आशा की रोशनी का दर्शन कराये, रोते हुए को जो प्रफुल्लित बनाये, उन्हें ही तो मनुष्य धर्मावलम्बी पद के दावेदार कहे जा सकते हैं। इस विन्दु से शुभकरण चूड़ीवाला जी भागलपुर के एक साधक पुरुष थे।

निर्धारित एवं संकलित अपने लक्ष्य के प्रति जो हमेशा जागरुक रहे, मनुष्य सेवा को ही जो धर्म समझे, जो अपने और अपने परिवार के भिन्न से हमेशा अभिन्न बने रहने के प्रयासी रहे, वैसे ही व्यक्ति पर भरोसा किया जा सकता है। शुभकरण बाबू इस मायने में साधु पुरुष रहे। गांधीजी के दैनिक प्रार्थना में गाये जाने वाले संत तुकाराम के उस भजन की उस पंक्ति को अक्षरसह जीवन में उतारने वाले वे अन्यतम रहे जिसमें कहा गया है—"**वैष्णव जन तो तेन कि हिये।**"

दिव्यलोक में विलीन होने के पूर्व के दशक में जब वे शरीर से असमर्थ रहने लगे थे, जो भी उनके निकट जाते थे, द्विधाविहीन वे आह्लादित हो स्वागत करते और अपने पास बिठा आदर करते थे वे,आध्यापन करते थे। अतिथि देवेभवः की भावना उनमें अकृतिम सर्वदा देखा पाया गया।

उनके कर्म मनुष्य स्वभाव का परिचय जो उनका अपना था, उसका विनाश नहीं हो सकता। 1

मधुमेह और हृदय-रोग

-डा० रमेश अग्रवाल

अत्यधिक प्रचलित खतरों के साथ, मधुमेह, अपने मरीजों को हृदय-रोग के, सर्वाधिक खतरे की आशंका में रखता है। पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों में यह जोखिम ज्यादा रहता है। वास्तव में, रजोनिवृत्ति के पहले तक स्त्रियों में CHD के विरुद्ध सुरक्षा की जो स्वाभाविक विशेषता होती है, वह मधुमेह के आते ही समाप्त हो जाती है, तथा उन्हें पुरुषों के समान, या उनसे अधिक खतरा होता है।

कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी में सैन डीगो (San Diego) में "द रैंचो बर्नार्डो अध्ययन" (the Rancho Bernardo Study) ने एक जारी योजना () द्वारा कुछ भीषण विशिष्टताएं प्रदान कीं। इसमें मधुमेह टाईप 2 (TYPE 2) के 207 पुरुषों और 1276 स्त्री मरीजों की तुलना, 2137 निरोगी बयस्कों से की। मधुमेह की मरीज महिलाओं को हृदय आघात की आशंका 3.3 गुना अधिक थी, वनिस्पत निरोगी महिलाओं के। पुरुषों में मधुमेह CHD का खतरा 1.8 गुना बढ़ता है। इस टाइप 2 के मधुमेह का नाश करना बहुत आसान है, परन्तु बहुत कम मधुमेह रोगी, इसका लाभ ले पाते हैं। इसका अंतिम नुस्खा, शारीरिक गतिविधियाँ बढ़ाने और वजन कम रखने का है। बार-बार के परीक्षण से, डॉक्टरों ने प्रमाणित किया है कि, जब कोई मरीज अपना वजन कम करता है और नियमित व्यायाम करता है तो, उसका शर्करा (Glucose) स्तर 126 से कम होता है, अक्सर 100 के लगभग। क्या यह कर पाना कठिन है? अवश्य ही है। अपनी पुरानी आदतों को छोड़कर, नयी स्वस्थ आदतों को अपनाने के लिए समर्पण भाव की जरुरत होती है। मधुमेह के मरीजों के लिए कोलेस्टेरोल स्तर विशेषरुप से महत्वपूर्ण होता है। टाईप 2 के रोगी, खतरे की विशेष जद में होते हैं, जब सुरक्षक HDl कम हो और LDL तथा ट्राईग्लीसेराइड्स ज्यादा हों। 'अमेरिकन हार्ट एसोसिएशन' के अधिकृत जर्नल में प्रकाशित एक खबर के अनुसार ऐसे व्यक्तियों में मरने का खतरा चार गुना अधिक होता है।

इन्सुलिन प्रतिरोध, अपने साथ जोखिमों का एक समूह लिए हुए है-जिसमें बढ़े हुए ट्राइग्लीसेराइड्स, कम HDL और उच्च रक्तचाप हैं। पहले ट्राक्टरों ने सोचा कि खतरे बढ़ाने में इन्हीं विशेष घटकों का हाथ है। लेकिन अब रक्त में इन्सुलिन की औसत से अधिक माता भी अपने आप में खतरनाक दिखाई दे रही है।

व्याकरण की किताब पर भी प्रतिबंध लगा दिया था ब्रिटिश हुकूमत ने

आजादी की लड़ाई में न केवल क्रांतिकारी गीतों, कविताओं, कहानियों और लेखों की पुस्तकें तथा पत्र पत्रिकाएं जब्त कर ली गयी थीं, बल्कि व्याकरण की एक किताब पर भी प्रतिबंधित लगा दिया गया था।

सुनने में यह आश्चर्यजनक जरूरत लगता है कि आखिर ब्रिटिश हुकूमत व्याकरण की एक किताब से कैसे डर गयी। दरअसल इस किताब में छात्रों को 'रस और अलंकारों' का उदाहरण समझाने के लिए जिन कविताओं का उल्लेख किया गया था, उनमें राष्ट्रीयता की पुट थी। बस इतनी सी बात पर अंग्रेज सरकार ने उसे प्रतिबंधित कर दिया। इस पुस्तक के लेखक थे हिन्दी के व्याकरणाचार्य आचार्य किशोरीदास वाजपेयी, और उनकी इस पुस्तक का नाम था 'रस और अलंकार'। 'हिन्दी ग्रंथ रत्नाकार', कार्यालय, मुंबई से छपने पर यह पुस्तक मुंबई सरकार ने तत्काल जब्त कर ली। इसके प्रकाशक नाथूराम प्रेमी थे, जिन्होंने पुस्तक पर प्रतिबंध लगने के बावजूद किशोरीदास जी को पारिश्रमिक दिया। यह पुस्तक मदन मोहन मालवीयजी को समर्पित की गयी थी।

स्वतंत्रता की लड़ाई में ऐसे जब्तशुदा साहित्य को आजादी की पचासवीं सालगिरह के मौके पर उत्तर प्रदेश सरकार की पत्रिका ने अपने 'स्वर्ग जयंती विशेषांक' में प्रकाशित किया है। पत्रिका के 'जब्तशुदा साहित्य विशेषांक' में मुंशी प्रेमचंद की जब्त कहानी विश्वंभर नाथ शर्मा कौशिक की 'फांसी', पांडेय बेचनशर्मा उग्र की 'जल्लाद', सज्जाद जहीन की 'नींद नहीं आती', आचार्य चतुरसेन शास्त्री की 'महावरों की एक रात' के अलावा रमेंद्र नाथ टाकुर, विस्मिल, इकबाल, सागर, निमामी, जां निसार अख्तर, अशफाक उल्ला, सरदार जाफरी, सोहनलाल द्विवेदी तथा कुछ अज्ञात कवियों की कविताएं भी पुन: प्रकाशित की गयी हैं।

पत्रिका में वीर सावरकर के जब्त इतिहास 'स्वाधीनता का पहला संघर्ष', जब्त पत्रिका 'न्यू इंडियन लिटरेचर', जी पी श्रीवास्तव का जब्त व्यंग्य 'कानूनी महल की बहस', शरतचंद्र का जब्त उपन्यास 'पथेर दाबी', बिस्मिल की जब्त 'आत्मकथा', शचींद्र नाथ सान्याल का 'बंदी जीवन',शंकर विद्यार्थी का 'मेरा जेल जीवन' तथा दीनबंधु मित्र का 'जब्त नाटक', 'दीनबन्धु मित्र' को भी पुन: प्रकाशित किया गया है। आजादी की लड़ाई में पत्रकारों के बलिदान और उनकी जेलगाथा के बारे में दिवंगत पत्रकार लक्ष्मीशंकर व्यास के लेख भी प्रकाशित किया गया है। इसके अलावा स्वतंत्रता आंदोलन में चित्रकारों के योगदान पर भी एक लेख प्रकाशित किया गया है, जिससे पता चलता है कि कलाकारों ने रंगों और कूचियों के माध्यम से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। ⊥

स्वामी विवेकानन्द का खेतड़ी प्रवास

-डॉ. तारादत्त 'निर्विरोध'

वेदांत शिरोमणि स्वामी विवेकानन्द और खेतड़ी राजस्थान के आदर्श महाराजा अजीत सिंह का विशेष प्रेम था जैसे दोनों एक दूसरे के लिए बनें हों। इन दोनों आत्माओं का मिलन 4 जून 1891 ई० के दिन माउंट आबू में हुआ था और नरेश ने पहले साक्षात्कार में ही पहचान लिया था कि यही युवा योगी अपनी प्रखर बुद्धि एवं तेजस्विता के कारण एक दिन भारत का गौरव तथा विश्व की विभूति बनेगा।

खेतड़ी महाराजा स्वयं विद्वानों के संरक्षक और ललित कलाओं के अनन्य प्रेमी थे। उन्हें विश्व विश्रुत आध्यात्मिक प्रतिभा स्वामी विवेकानन्द के सानिध्य एवं सत्संग का सौभाग्य मिला जो रामकृष्ण परमहंस की दिव्य प्रेरणा प्राप्त करके जागरण यात्रा के दौरान सन् 1891 में राजस्थान के आबू पर्वत पर पहुँचे थे। स्वामी जी के विराट रूप एवं व्यक्तित्व और उनकी विद्वता से प्रेरित होकर महाराजा ने उन्हें गुरू के रूप में स्वीकार किया, अनुरोध करके सम्मानपूर्वक खेतड़ी लेकर आए।

स्वामी विवेकानन्द प्रथम बार 7 अगस्त 1891 को खेतड़ी आए और उन्होंने वहां 27 अक्टूबर तक प्रवास किया। उसी दौरान खेतड़ी के राज पंडित, व्याकरणाचार्य एवं पांडित्य के लिए विख्यात नारायणदास शास्त्री के पाणिनी के व्याकरण अष्टाध्यायी तथा पंतजली के महाभाष्यादि का अध्ययन किया। उन्होंने शास्त्री जी को मेरे अध्यापक कहकर संबोधित किया।

खेतड़ी प्रवास के समय स्वामीजी ने महाराजा के साथ प्रतिदिन आध्यात्मिक विषयों पर विचार विमर्श किया और इस तरह दोनों के बीच गम्भीर विचारों का आदान प्रदान हुआ। महाराजा के मानसिक धरातल को अत्यधिक व्यापक बनाने के लिए स्वामीजी ने उन्हें सम्पूर्ण विषय की जानकारी दी।

तब महाराज अजीत सिंह की दो संताने पुत्रियाँ ही थी और वे पुत्र के लिए सदैव चिंतित रहा करते थे। स्वामीजी के धार्मिक गुणों से महाराजा को आशीर्वाद मिला तो उन्हें पुत्र लाभ भी हुआ।

स्वामी विवेकानन्द की दूसरी खेतड़ी यात्रा शिशु राजकुमार जयसिंह को आशीर्वाद देने के निमित्त जन्मोत्सव समारोह के अवसर पर हुई। तब स्वामीजी ने वहां 21 अप्रैल, 1893 से 18 मई, 1893 तक प्रवास किया।

बाद में महाराजा अजीतसिंह के आर्थिक सहयोग से स्वामी विवेकानन्द ने अमेरिका पहुंच कर वेदांत की पताका फहराई और भारतीय धर्म का गौरव बढ़ाया।

उन्होंने शिकागों-अमेरिका से भी अनेक पत्र खेतड़ी नरेश को लिखे जो आज खेतड़ी स्थित श्री रामकृष्ण मिशन की शाखा में सुरक्षित हैं।

यह बात बहुत कम लोग जानते हैं कि स्वामीजी का सर्वजन विदित विवेकानन्द नाम महाराजा अजीतसिंह ने ही रखा था। स्वामीजी तो अपना नाम विदितदिषानंद लिखते थे। स्वामीजी हिन्दू धर्म प्रचार के साथ सांसारिकता से भी जुड़े रहे और उन्होंने चरित्र, आध्यात्म तथा सांसारिकता का समन्वय पसंद किया।

एक दिन की बात, महाराजा फतह महल के प्रांगण में स्वामीजी के साथ धार्मिक चर्चा कर रहे थे तभी राज्य की नर्तकियों ने गायन-वादन का अनुरोध किया। जब दल की नेत्री मैना बाई ने सूरदास रचित "प्रभु मेरे अवगुण चिंत न धरो" पद सुनाया तो स्वामीजी की आँखों से पश्चाताप मिश्रित अश्रु-धारा बह निकली और उन्होंने उस पतिता नारी को ज्ञानदायिनी भी कहकर संबोधित किया। ⊥

हम संस्कृति के करीब आ गए...

रायपुर/समता कालोनी स्थित भीमसेन भवन रविवार की शाम राजस्थानी लोक नृत्यों की छटा से सराबोर हो उठा। पारंपरिक वेशभूषा में महिलाओं और बच्चों ने सतरंगी छटा बिखेरी। कभी घूमर की मस्तियां तो कभी ब्रज की होली की धूम ने दर्शकों को देर रात तक बांधे रखा। अवसर तथा राजस्थानी नृत्य कला प्रशिक्षण एवं विधि कला प्रशिक्षण कार्यशाला के समापन का स्वागत और उद्‌बोधन की औपचारिकता के बाद प्रशिक्षित बालाओं ने जो कुछ सीखा, उसकी मंच पर ऐसी प्रस्तुतियां दी कि सभी भावविभोर हो उठे। राजस्थान की आदिवासी महिलाएं ऊंट के श्रृंगार की सामग्री बनाते वक्त जो गीत और नृत्य करती हैं उसे गोरबंध कहते हैं और इसी प्रस्तुति से शुरू हुई आज की राजस्थानी नृत्य की कड़ी। इसके बाद होली के रंग में रंगा डांग लीला की शानदार प्रस्तुति हुई। जिसे प्रीति खंडेलवाल और साथियों ने किया।

बच्चों की इस प्रस्तुति से जहां दर्शक ताली बजाने को बाध्य हो गए वहीं लोगों ने इसका आनंद भी लिया।

सावन के गीतों से सजी नृत्य सावन सुरंगों में युवतियों ने सभी को रोमांचित किया। इसके बाद खंजरी, चरी नृत्य, फूल चरी, कालबेलिया, चुंदर मंगा दो, हरीयो रुमाल, ब्रज की होली, भवई, डोलकड़ी और तिरंगा नृत्यों ने दर्शकों को बांधे रखा। गौरतलब है कि उदयपुर राजस्थान की श्रीमती शकुंतला पवार ने 15 दिन में राजधानी की महिलाओं, युवतियों और छोटी लड़कियों को राजस्थानी नृत्य का प्रशिक्षण दिया। कार्यक्रम के दौरान भी मौजूद होकर उन्होंने प्रशिक्षुओं का उत्साह बढ़ाया। कार्यक्रम के दौरान बच्चे, महिला एवं युवतियों ने प्रतिभागियों का जमकर उत्साहवर्धन किया। 15 दिनों से चल रहे राजस्थानी नृत्य प्रशिक्षण शिविर के आखिरी दिन बच्चों सहित युवतियों ने भी राजस्थानी नृत्य से कार्यक्रम में नया रंग एवं जोश भर दिया। मारवाड़ी सेवा समिति की अध्यक्षा श्रीमती प्रज्ञा राठी ने बताया कि प्रशिक्षण शिविर में 90 प्रशिक्षार्थियों ने राजस्थानी लोक नृत्य का प्रशिक्षण लिया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में शहर के गणमान्य नागरिकों एवं प्रशिक्षणार्थियों के पालकगण उपस्थित थे। विशेष तौर पर महिलायें, युवतियां कार्यक्रम के समापन तक इसका आनंद उठाती रही।

भवई नृत्य ने चौंकाया : राजस्थानी नृत्य की कड़ी में भवई नृत्य जैसे करतबी नृत्यों ने दर्शकों को चौंका दिया। भवई नृत्य जहां बोतल के ऊपर, परात, फिर बोतल, गिलास, कील आदि वस्तुओं पर संतुलन का हैरत अंगेज नृत्य था।

ग्यारह कलशों के साथ गजब का संतुलन : सिर पर ग्यारह कलश रखकर संतुलन को बनाए रखते हुए नृत्य करना अपने आप में बहुत बड़ी बात होती है। इस नृत्य की प्रस्तुति देख हर कोई हतप्रभ रह गया।

कला गुरूओं का अभिनंदन : श्री अग्रवाल (मन्त्री महोदय) एवं श्री गोपाल मोर द्वारा इस अवसर पर सभी प्रशिक्षणार्थियों को शुभकामनाएँ दी साथ ही उन्होंने उदयपुर (राजस्थान) से पधारी अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त लोक नृत्य प्रशिक्षक द्वय-श्री गोवर्धन जी पवार एवं श्रीमती शकुन्तला जी पवार, पेपमेशी क्राॅफ्ट के लिए- श्री गोविंद सिंहजी नागवंशी, ग्वालियर (म. प्र.), स्टैन ग्लास प्रशिक्षक- शरी मनीषजी, कराते प्रशिक्षक-सुश्री हर्षाजी साहू, व्यक्तित्व विकास प्रशिक्षक द्वय-श्रीमती विनीता जी शुक्ल, श्री शशांक जी शुक्ल, ब्यूटीशियन प्रशिक्षक-श्रीमती किरण जी गुप्ता को रूमाल, श्रीफल एवं अभिनंदन पत्र द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन शशांक शुल्क ने तथा आभार प्रदर्शन सूरज राठी ने किया।

सम्मेलन के राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री का दो दिवसीय हैदराबाद दौरा

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री रवीन्द्र कुमार लड़िया का गत दिनांक 28 एवं 29 जून 2007 को दो दिवसीय हैदराबाद प्रवास के दौरान आंध्र प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष एवं महेश बैंक के चेयरमैन रमेश कुमार बंग, प्रांतीय महामंत्री श्री नरेश चन्द्र विजयवर्गीय एवं महेश बैंक के एम.डी. श्री जाजू के साथ संक्षिप्त बैठक का आयोजन। चर्चा के दौरान राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री ने प्रांतीय अध्यक्ष से अनेक कार्यक्रमों हेतु चर्चा की तथा प्रदेश के संगठन पर भी विस्तार से बातें की।

प्रान्तीय अध्यक्ष श्री बंग एवं प्रांतीय महामंत्री श्री नरेश चन्द्र विजयवर्गीय ने राष्ट्रीय संयुक्त मंत्री श्री रवीन्द्र कुमार लड़िया का हैदराबाद दौरे के दौरान राजस्थानी पगड़ी, माला एवं स्मारक प्रदान कर सम्मान भी किया।

महिला सिलाई केन्द्र का शुभारम्भ

जूनागढ़ में ता. 17.6.2007 को चमेली देवी महिला महाविद्यालय के नये भवन में महिला सिलाई शिक्षा केन्द्र गायत्री परिवार ट्रस्ट के अध्यक्ष माणिक चन्द्र अग्रवाल के द्वारा शुभारंभ हुआ। श्रीमती कांतादेवी बंसल ने स्वागत भाषण दिये। मारवाड़ी महिला समिति अध्यक्ष श्रीमती जामोती देवी अग्रवाल सिलाई केन्द्र के लिए चार सिलाई मशीन प्रदान किये। इस अवसर पर जूनागढ़ की उपनगर पाल सीता देवी मांझी, श्रीमती सुशीला देवी बंसल, श्रीमती बसन्ती पाढ़ी, चमेली देवी महिला महाविद्यालय की अध्यक्षा श्रीमती प्रिय मंजरी पाण्डा, छात्रा श्वेता खेमका, श्री संजय कुमार अग्रवाल ने सिलाई शिक्षा के जरूरत पर भाषण दिये। श्री पुरुषोत्तम बंसल, श्री रामोतार बंसल श्री बेद प्रकाश गोयल, श्रीमती गुलाबी अग्रवाल उपस्थित थे। मारवाड़ी महिला समिति के पूर्व सभापति श्रीमती आशा देवी खेमका ने धन्यवाद प्रदान किये। इस केन्द्र पर शाम 3 बजे से 5 बजे तक सिलाई शिक्षा दिया जायेगा। श्रीमती शान्ति लता बैठारू भी ऊन बुनाई व रंगोली बनाना सिखायेगी।

राजस्थान एसोसियेशन (कानपुर)

संस्था की 34वीं वार्षिक साधारण सभा में वर्ष 2007-2010 (तीन वर्ष) के लिए श्री दलपत चन्द जैन लगातार चौथी बार अध्यक्ष पद के लिए निर्विरोध चुने गये। अन्य पदाधिकारियों में विजय माहेश्वरी उपाध्यक्ष, सत्येन्द्र माहेश्वरी-महामंत्री करनराज बोहरा-मंत्री व प्रेमनारायण सोमानी कोषाध्यक्ष चुने गये। साधारण सभा को सम्बोधित करते हुए अध्यक्ष दलपतचन्द जैन ने बताया कि संस्था शीघ्र ही आधुनिक उपकरणों के साथ बी. आर. कुम्भट स्मृति पैथालॉजी, एक्सरे व सिटी स्केन सेन्टर की स्थापना करेगी। द्वितीय राजस्थान भवन अतिथि गृह में आधुनिक सुविधा युक्त सुसज्जित वातानुकूलित बंकेट हॉल, डाइनिंग हॉल व कमरों का निर्माण कराया जायेगा तथा रोजगारपरक कम्प्यूटर शिक्षा केन्द्र खोलने की भी योजना है।

मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा मेधावी छात्रों का सम्मान

सिलचर स्थानीय जैन भवन में 10 जून को मेधावी छात्रों का पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा सम्मान किया गया। 10 श्रेष्ठ छात्रों को उनके उत्तम स्थान के लिए, 4 रामानुज गुप्त कालेज के श्रेष्ठ छात्रों को, 19 छात्रों को एक एक विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने के लिए।

7 विद्यालयों को उनके शत प्रतिशत परिणाम के लिए सम्मानित किया गया। समारोह में मुख्य अतिथि **भारत सेवाश्रम संघ** के मृण्मयानन्दजी महाराज थे, विशेष अतिथि के रूप में विशिष्ट शिक्षाविद् डॉ. तापस शंकर दत्त उपस्थित थे। समारोह की अध्यक्षता सम्मेलन के सभापति देवकी नन्दन जालान ने की। संचालन महासचिव गोविन्द मूँधड़ा कर रहे थे। समारोह में वन्देमातरम् संगीत पर नृत्य हुआ। सम्मान समारोह के प्रकल्प संचालक का दायित्व कमल शारदा को दिया गया था। पुरस्कार के रूप में प्रमाण पत्र, ट्राफी व पुस्तकें प्रदान की गयी। अतिथि वक्ताओं के अतिरिक्त **होली क्रास** के प्रधानाचार्य व **होली चाइल्ड** के प्रधानाचार्य ने सभा को संबोधित किया। धन्यवाद ज्ञापन श्री अमरनाथ खंडेलवाल ने किया। समारोह में मुख्य रूप से सर्वश्री सौरीन्दर भट्टाचार्य, महावीर जैन, हनुमान जैन, राजेन्द्र अग्रवाल, कुंज बिहारी ग्वाला, राजकुमार जैन, परमेश्वर लाल काबरा, कन्हैयालाल सिंगोदिया, बुद्धमल वैद आदि उपस्थित थे।

सामाजिक संस्थाओं से अनुरोध

समाज विकास के सम्पादक मंडल ने निर्णय लिया है कि देशभर में मारवाड़ी समाज द्वारा संचालित समाज की धरोहर कलम के अन्तर्गत : चिकित्सालय, पुस्तकालय, औषधालय, शिक्षालय, विवाह भवन, धर्मशालायें आदि की पूर्ण जानकारी, उनके वर्तमान पदाधिकारियों की सूची के साथ व संस्था के पूर्ण इतिहास को प्रकाशित करेंगी। कृपया अपनी पूर्ण सामग्री हमें अगले दो माह के अन्दर भेजने का कष्ट करें। - सम्पादक

हमारा email - samajvikash@gmail.com है।

श्री विनोद प्रांतीय महामंत्री मनोनीत

श्री विनोद तोदी

श्री विनोद तोदी बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री पद पर मनोनीत किये गये हैं। आप पूर्व में बिहार प्रांतीय मारवाड़ी युवा मंच के प्रांतीय अध्यक्ष एवं अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के उपाध्यक्ष भी रह चुके हैं।

ईस्टर्न रीजन में 9वां स्थान

अकल दुधवेवाला पुत्र श्री अधीर दुधवेवाला ने सी.ए. के इंटर (PE-II) की परीक्षा में ईस्टर्न रीजन में प्रथम स्थान प्राप्त कर राष्ट्रीय स्तर पर 9वां स्थान एवं इनकम टैक्स केन्द्रीय सेल्स टैक्स विषय में 95% अंक प्राप्त किया। बधाई।

स्वाधीनता पर्व-पन्द्रह अगस्त

आज ही के दिन लिखी, इतिहास ने नूतन कहानी
आज का पावन दिवस ही, स्वतंत्रता की है निशानी

आज ही के दिन उगा था, नील नभ में ज्योति तारा
इस धरा से आज के दिन ही, मिटा था घन अँधियारा

आज ही के दिन विजय का, निर्झरों ने गीत गाया
स्वतन्त्र भारत आज है, संदेश यह जग को सुनाया

आज ही के शुभ दिवस में, बेड़िया मां की कटी थी
परतन्त्रता से मुक्ति पाई, आज ही वह शुभ घड़ी थी

युगयुगों की दासता का, आज ही था बांध टूटा
जालिम फिरंगी राज्य का था, आज के दिन पाप फूटा

आजाद करने देश को, जिनने करी कुर्बानियां थी
आज के दिन सार्थक, उनकी हुई बलिदानीयां थी

लालकिले पर आज के दिन, ही उड़ा प्यारा तिरंगा
जयहिन्द का कर घोष जग में, मस्त लहराया तिरंगा

इसलिए हम भारती को, आज का दिन है ये प्यारा
खुशियां मनाता इसलिये ही, आज के दिन देश सारा

जब तलक वह नील अम्बर, "राधे" यह धरणी रहेगी
अगस्त पन्द्रह की तिथि भी, शान से मनाती रहेगी।

-राधे श्याम शर्मा "राधे"

wonder images

Leading solvent printing unit for outdoor & indoor ad.

- Crystal clear digital printing with vutek machine, on Flex, SAV, One way vision, UK Media, Mesh, Lamination, Canvas, etc.
- 40,000 sq ft per day production capacity .
- No compromise in quality.

Wonder images Pvt. Ltd.

2 Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph: 2225 1862/3/4/5, 9830425990, Fax : 91-33-2225 1866
email : wonder@cal2.vsnl.net.in

REGISTERED Postal Registration
No. SSRM/KOL/WB/RNP-093/2007-09
Date of Publication- 29th July 2007
RNI Regd. No . 2868/68

वैवाहिक आचार संहिता

- मिलनी सबकी ४ रुपया, चांदी छोड़ कागज का रुपया।
- पानी से पापड़ तक अधिकतम २५ व्यंजन का नियम लागू हो।
- विवाह में दोनों पक्ष को मिलाकर यथासंभव सीमित उपस्थिति हो।
- कम खर्च वाले साधारण निमंत्रण पत्र छपने चाहिए।
- सजन-गोठ बन्द हो।
- नेग का कार्यक्रम एक ही होना चाहिए।
- सगाई/विवाह की मिठाई का खर्च वर पक्ष ही वहन करें।
- बैण्ड, सड़क पर नाच, वैवाहिक समारोहों में शराब का उपयोग वर्जित हो।
- रात्रि के विवाह की बनिस्पत दिन के विवाह को प्राथमिकता दी जाए।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
१५२ बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७०००७
फोन - २२६८-०३१९

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319

To,